भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 5 | **नवम्बर** 2004 | **अंक** 11

किताबों की धरोहर

ये किताबें सँभाल कर रखिये।
रत्ननिधि ये निखार कर रखिये।
गंध महकेगी इन किताबों की,
आग दहकेगी इन किताबों की,
ये सतत साधना अमर फल हैं,
बाना अपना बहार भर रखिये॥
इनके भीतर अमिट उजाला है,
नीति नवनीत का निवाला है
कल के मौसम का क्या ठिकाना है,
दीप की लौ उबार कर रखिये॥
लक्ष्य पाना सदा ही सिखायेंगी
हर अमीरी जहाँ भिखारिन सी,
देव मन्दिर बुहार कर रखिये
मोल इनका इसे जमाने में,
युग गये ज्ञान की गंगा लाने में।
इनमें परछाइयाँ झलकती है,
अंशु शीशा सँवार कर रखिये
संधि की, युद्ध की कहानी है,
मौन वाचाल, आग पानी हैं
प्रश्न होंगे, जवाब भी देगी,
अपना आगत सुधार कर रखिये।
ये किताबें सँभालकर रखिए,
रत्ननिधि ये निखार कर रखिए।

— **वीरेन्द्रप्रकाश गुप्त 'अंशुमाली',** लखनऊ

बेचारा हिन्दी अध्यापक

मैं हिन्दी का अध्यापक हूँ
मेरी लंबी चुटिया है
है बंद गले का कोट
गोल टोपी
लंबा सिर पूरा तन
मैं खम्भा सदृश
चलायमान युग में
खड़ा हुआ अविचल
अपने कॉलिज के घेरे में
पंडिज्जी कहकर व्यापक हूँ
मैं हिन्दी का अध्यापक हूँ।

— **गोपालप्रसाद व्यास**

पुस्तकों की सरकारी खरीद का गोरखधंधा

प्रतिवर्ष प्रदेश सरकारें तथा केन्द्र के अनेक विभाग विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत करोड़ों रुपये की पुस्तकें खरीदते हैं। हर एक की पुस्तक चयन और क्रय की प्रक्रिया अलग-अलग है। राज्य स्तर पर यह प्रक्रिया गोरखधंधा बन गयी है।

पुस्तक क्रय की प्रक्रिया भयावह भ्रष्टता की ओर बढ़ती जा रही है। गतवर्ष छत्तीसगढ़ सरकार के राजीव गाँधी शिक्षा मिशन ने प्रकाशकों से सर्वशिक्षा अभियान के अन्तर्गत पुस्तकालयों हेतु पुस्तकें क्रय करने हेतु प्रत्येक पुस्तक की पाँच-पाँच प्रतियाँ नि:शुल्क और प्रत्येक टाईटिल के लिए पचास रुपये प्रोसेसिंग शुल्क जमा कराये। लाखों रुपये सरकार को इस प्रोसेसिंग शुल्क से प्राप्त हो गये, पर बहुत से प्रकाशकों द्वारा सबमिट की गई पुस्तकों के पैकेट भी नहीं खुले और कुछ विशेष प्रकाशकों और माफिया समूह को पुस्तकों के आदेश हो गये।

इस वर्ष यही कहानी मध्यप्रदेश में दुहरायी गयी। राज्य साक्षरता मिशन प्राधिकरण म०प्र० में ग्रामीण पुस्तकालयों हेतु पुस्तकों के चयन हेतु पुस्तकें आमंत्रित की गयी। इस सन्दर्भ में समाचार पत्र में संक्षिप्त विज्ञापन प्रकाशित हुआ जिसमें वेबसाइट से विस्तृत जानकारी प्राप्त करने का निर्देश हुआ। इसके अनुसार प्रत्येक प्रकाशक को अधिकतम 10 पुस्तकें प्रस्तुत करनी थीं। प्रत्येक पुस्तक के लिए समीक्षा शुल्क स्वरूप 40 रुपये रेखांकित ड्राफ्ट द्वारा जमा कराये गये। यह सारी प्रक्रिया पूरी कर नियमित-अनियमित प्रकाशकों ने लगभग 14000 पुस्तकें और 5,60,000 रुपये समीक्षा शुल्क स्वरूप जमा कराये।

यहाँ भी छत्तीसगढ़ की कहानी दुहरायी गयी। प्रस्तुत किये गये पैकेटे खुले नहीं, समीक्षा हुई नहीं और कुछ राजनीतिक प्रभाव वाले और माफिया समूह जिनको कुछ प्रकाशकों ने अपना ठीकेदार नियुक्त कर रखा है चटपट आदेश हो गये। दो सौ तथाकथित प्रकाशकों को आदेश निर्गमित किये गये, ऐसे प्रकाशकों को जिन्होंने सरकारी थोक खरीद के लिए 30-40 फर्म बना रखे हैं, जिनका अस्तित्व केवल आदेश प्राप्त करने के लिए है। संयोग से इस खरीद के नियामक भी वही अधिकारी थे जो उस समय छत्तीसगढ़ में थे। यह कैसी विडम्बना है कि हमारे देश की सरकार सर्वशिक्षा अभियान द्वारा सबको शिक्षित करने की महत्वाकांक्षी योजना कार्यान्वित करने का प्रयास कर रही है, उसका क्या स्वरूप बनता जा रहा है।

वेबसाइट पर क्रय-योजना का विवरण दिया जाता है, क्या वेबसाइट पर यह भी बताया जायगा कि किस प्रकाशक की कौन-कौन-सी पुस्तकें कितनी प्रतियों में खरीदी गयीं। देश की जनता को सूचना का अधिकार है या नहीं?

माननीय मनमोहन सिंह की केन्द्र सरकार क्या ऐसे कारनामों की जाँच करायेगी ?

दुनियाभर के देशों की ईमानदारी और बेईमानी का लेखा-जोखा रखनेवाली अन्तर्राष्ट्रीय संस्था ट्रांसपरैंसी इण्टरनेशनल ने सर्वाधिक भ्रष्टतम देशों में भारत को 56वाँ स्थान दिया है और स्वच्छ प्रशासन की सूची में 90वाँ गौरवशाली स्थान प्रदान किया है। ऐसे ही चलता रहा तो वर्ष प्रतिवर्ष स्वच्छता और भ्रष्टता की सूची में सर्वोच्चता की ओर बढ़ते रहेंगे।

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

कब हमारे देश के प्रशासन में पारदर्शिता आयेगी? महात्मा गाँधी के देश के कर्णधारों क्या कुछ विवेक शेष है?

पुस्तक प्रकाशन एक बौद्धिक कार्य है, प्रतिष्ठान में प्रकाशन कार्य के लिए अनेक बुद्धिजीवी निरन्तर कार्यरत होते हैं। वे नियमित रूप से अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित करते हैं, ऐसे अनेक ग्रन्थ जिनके पाठक बहुत कम होते हैं किन्तु वे ज्ञान की धरोहर हैं। क्या पुस्तकों के आदेश करते समय प्रकाशकों की क्षमता की जाँच की जाती है? अच्छी पुस्तकों के प्रकाशन को प्रोत्साहन देने, जन-जन तक पुस्तकें पहुँचाने के लिए क्या यह आवश्यक नहीं है?

प्रतिवर्ष करोड़ों रुपये पुस्तकों के मद में अपव्यय करने के पूर्व उस चयन-प्रक्रिया की जाँच करायी जाय और यह भी देखा जाय कि पुस्तकें जहाँ दी जाती हैं वहाँ उनका सही उपयोग होता है या नहीं, पुस्तकों की व्यवस्था के लिए कोई सक्षम व्यक्ति है या नहीं? **—पुरुषोत्तमदास मोदी**

सम्मान-पुरस्कार

मनोहर श्याम जोशी व मृदुला गर्ग पुरस्कृत

कला गोइन्का फाउण्डेशन, मुम्बई द्वारा स्थापित 'स्नेहलता गोइन्का व्यंग्यभूषण पुरस्कार 2004' सुप्रसिद्ध लेखक मनोहरश्याम जोशी को हिन्दी व्यंग्य विधा में उनके समग्र योगदान और उनकी पुस्तक 'उस देश के यारों क्या कहना' के लिए दिया गया। महिला रचनाकारों के लिए 'रत्नीदेवी गोइन्का वाग्देवी सम्मान-2004' मृदुला गर्ग को उनकी पुस्तक 'कठगुलाब' के लिए दिया गया। पुरस्कार में क्रमश: एक लाख और इक्कीस हजार रुपये दिए गये।

सावित्री रांका को प्रतिभा पुरस्कार

20 सितम्बर 2004 को जयपुर के विद्याश्रम स्कूल सभागार में श्री द्वारका सेवा निधि द्वारा आयोजित भव्य समारोह में हिन्दी की वरिष्ठ कथाकार **श्रीमती सावित्री रांका** को जावित्री देवी जोशी प्रतिभा पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर पूर्व उपमुख्यमंत्री श्री हरिशंकरजी भाभड़ा ने ग्यारह हजार का चेक, स्मृति चिन्ह, चाँदी का नारियल और शॉल द्वारा उन्हें सम्मानित किया।

प्रथम राष्ट्रीय अक्षर-सम्मान समारोह

लुधियाना के पंजाबी भवन सभागार में 26 सितम्बर 2004 को प्रथम राष्ट्रीय अक्षर सम्मान समारोह 'प्रीत साहित्य सदन' लुधियाना के सहयोग से आयोजित हुआ। सर्वाधिक पुस्तक-मेले आयोजित करने वाली संस्था अक्षरधाम समिति (रजि०) कैथल (हरियाणा) की ओर से 26 साहित्यकारों को सम्मानित किया गया। प्रत्येक साहित्यकार को 1100 रुपये की साहित्यिक पुस्तकें, शाल, स्मृति चिन्ह के अतिरिक्त मल्टीकलर सम्मान पत्र भी दिया गया। जिसमें साहित्यकार का रंगीन छायाचित्र भी था।

1. अक्षर भूषण—प्रबोधकुमार गोविल, (वनस्थली, राजस्थान) 2. अक्षर विभूषण—श्याम विद्यार्थी, (डिब्रूगढ़, असम), 3. अक्षर रत्न—सतीश दुबे, (इन्दौर, म०प्र०), 4. अक्षर वीर—रमेश सोबती, (लुधियाना, पंजाब), 5. अक्षर सेवी—पद्म गुप्ता, (दिल्ली), 6. अक्षर राज—सुरेश शर्मा, (इन्दौर, म०प्र०), 7. अक्षर प्राचार्य—भानुदत्त त्रिपाठी, (उन्नाव, उ०प्र०), 8. अक्षर प्रिय—घमण्डीलाल अग्रवाल, गुड़गाँव, 9. अक्षर सेन—पुष्पेन्द्र वर्णवाल, मुरादाबाद (उ०प्र०), 10. अक्षर हंस—नरेन्द्र मिश्र धड़कन, 11. अक्षर गौरव—सुश्री कृष्णा कुमारी, 12. अक्षर श्री—डॉ० सुशील पाण्डेय, सुल्तानपुर (उ०प्र०), रसूल अहमद सागर, रामपुरा (उ०प्र०), इन्दिरा अग्रवाल, अलीगढ़ (उ०प्र०), अजीज अंसारी, इन्दौर (म०प्र०), हबीब राहत हुबाब, खण्डवा (म०प्र०), शंकर सक्सेना, राजनंदगाँव (छ०ग०), डॉ० वीरेन्द्रकुमार दुबे, छिन्दवाड़ा (म०प्र०), सार्थ, कानपुर (उ०प्र०), डॉ० शरदनारायण खरे, (म०प्र०), हर्षकुमार हर्ष, पटियाला (पंजाब), डॉ० राजबीर सिंह धनखड़, रोहतक (हरि०), हेमचन्द्र सकलानी, देहरादून, प्रज्ञा पाठक, उज्जैन (म०प्र०), उषा यादव, इलाहाबाद, डॉ० संजय गर्ग, मुजफ्फरनगर (उ०प्र०)।

डॉ० सुरेन्द्र विक्रम को सृजन सम्मान

लखनऊ क्रिश्चियन पी०जी० कॉलेज के **डॉ० सुरेन्द्र विक्रम** को छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक एवं वैचारिक संस्था की ओर से हिन्दी माह के अवसर पर सृजन सम्मान के अन्तर्गत मावजी चावड़ा बाल साहित्य सम्मान प्रदान किया गया। रायपुर में सम्पन्न इस समारोह में वहाँ के राज्यपाल महामहिम के०एम० सेठ ने डॉ० सुरेन्द्र विक्रम को सम्मान राशि के साथ अंगवस्त्र, श्रीफल, प्रशस्ति-पत्र तथा सृजन सम्मान द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का एक सेट भेंट किया।

साहित्य अकादमी फेलो

पंजाब की जानी-मानी और हिन्दी में लोकप्रिय साहित्यकार **अमृता प्रीतम** तथा कन्नड़ भाषा के प्रख्यात उपन्यासकार **यू०आर० अनन्तमूर्ति** को साहित्य अकादमी का सर्वोच्च सम्मान प्रदान करते हुए संस्था का फेलो चुना है। एक नवम्बर को प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने इन रचनाकारों को फेलोशिप से सम्मानित किया। इन रचनाकारों के साथ बंगाली कवि शंखघोष, राजस्थानी व हिन्दी के रचनाकार विजयदान देना और तेलुगु रचनाकार, भाषाविद् व शोधार्थी प्रो० बी०एच० कृष्णमूर्ति को भी साहित्य अकादमी फेलोशिप से सम्मानित किया गया।

कथाकार विवेकीराय को नरेन्द्रमोहन आंचलिक लेखन सम्मान

प्रेमचंद के बाद जिस कथाकार ने गाँवों के खेतों, खलिहानों, बाजार, हाट और पगडंडियों को अपने लेखन का विषय बनाया, उसे 'जागरण' के स्व० यशस्वी पत्रकार नरेन्द्रमोहन स्मृति काव्य संध्या के दौरान 11 अक्टूबर 2004 को आंचलिक लेखन सम्मान से विभूषित किया गया। 'मनबोध मास्टर की डायरी' के माध्यम से विवेकी राय ने स्वतंत्रता के पूर्व और उसके बाद के गाँवों का जो चित्रण किया वह आज भी स्मरणीय है। उनकी रचनाओं में गाँव का संघर्षमय जीवन अभिव्यक्त है। ऐसे यशस्त्री रचनाकार को यह सम्मान वाराणसी के 'जागरण' से मिला जबकि वर्षों तक उन्होंने काशी के 'आज' में लिखा।

प्रथम बार दिये गये इस पुरस्कार में 81 वर्षीय विवेकी राय को ग्यारह हजार रुपये की राशि प्रदान की गयी। इस अवसर पर आभार व्यक्त करते हुए विवेकी राय ने कहा—''दैनिक जागरण के पूर्व प्रधान सम्पादक स्व० नरेन्द्रमोहन न केवल पत्रकार बल्कि साहित्यकार भी थे। कविता उनके जीवन से जुड़ी थी। इस सम्मान को पाकर काफी अभिभूत हूँ। मैं कैसे लिखता हूँ, इसका मूल्यांकन आपने किया।'' इस अवसर पर युगेश्वर ने कहा—लोगों ने गाँवों को देखा है, किन्तु विवेकी राय ने गाँवों को जीया है। वे गाँव की वेदना को यथार्थवादी दृष्टिकोण से व्यक्त करते हैं। उनकी रचनाओं 'बबूल', 'लोकऋण' में आजादी के बाद गाँवों की मेड़, सड़कें, पंचायत की समस्याएँ उजागर हुई हैं।

नोबल पुरस्कार

इस वर्ष साहित्य का नोबल पुरस्कार आस्ट्रिया की उपन्यासकार, नाटककार और कवि **एलफ्रीड जेलिनेक** को दिया जायगा। जेलिनेक को पाठकों और उपन्यास में संगीतमय प्रभाव और लेखनी के जरिये समाज की सच्चाई करने के लिए पुरस्कृत किया जा रहा है।

आनन्द सागर पुरस्कार

सुप्रसिद्ध कथाकार **असगर वजाहत** को इस वर्ष का 'आनन्द सागर कथाक्रम' पुरस्कार आगामी 20 नवम्बर 2004 को दिया जायगा। सम्मान के तहत श्री वजाहत को पन्द्रह हजार रुपये, सम्मान-पत्र तथा अंगवस्त्र आदि प्रदान किये जायेंगे। निर्णायक समिति के अध्यक्ष वरिष्ठ कथाकार श्रीलाल शुक्ल हैं।

यत्र-तत्र-सर्वत्र

इक्कीसवीं सदी में उन्नीसवीं सदी का पुण्य स्मरण

राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' को बुधवार 15 सितम्बर 2004 को पहली बार डायमण्ड होटल काशी में स्मरण किया गया। अवसर था डॉ० वीरभारत तलवार द्वारा सम्पादित पुस्तक 'राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' प्रतिनिधि संकलन' का लोकार्पण और परिचर्चा गोष्ठी। आयोजक थे राजा साहब के पाँचवीं पीढ़ी के वंशज कुँअर परमानन्दप्रसाद सिंह, कार्यक्रम का संयोजन विश्वविद्यालय प्रकाशन ने किया और संचालन पुरुषोत्तमदास मोदी ने। अध्यक्षता तथा लोकार्पण डॉ० निर्मला जैन, पूर्व प्रोफेसर तथा आचार्य हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय ने किया। मुख्य अतिथि थे पुस्तक के प्रधान सम्पादक डॉ० नामवर सिंह। परिचर्चा में डॉ० अवधेश प्रधान, डॉ० बलिराज पाण्डेय, डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह, डॉ० बच्चन सिंह तथा डॉ० वीरभारत तलवार ने भाग लिया।

डॉ० नामवर सिंह ने कहा—राजा साहब के सन्दर्भ में यह पहली गोष्ठी है, खुशी की बात है कि यह काशी में हो रही है। राजा साहब पर केन्द्रित इस विचार गोष्ठी का आयोजन कर बहुत बड़ी भूल का सुधार किया गया है। वस्तुत: राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' हिन्दी नवजागरण के पुरोधा थे, जिन्होंने देवनागरी लिपि की माँग, हिन्दी पाठ्य-पुस्तकों का निर्माण तथा पहली बार हिन्दी में भारत का प्रामाणिक इतिहास लिखकर नवजागरण चेतना पैदा की। राजाशिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' को भारतेन्दु बाबू और उनकी मण्डली द्वारा खलनायक कहे जानेपर नामवरजी ने असहमति जताते हुए कहा ऐसी बात उस समय के किसी साहित्यकारों में नहीं रही। उनका धरातल बड़ा व्यापक होता था। कहने को दिल्ली राजधानी रही लेकिन लड़ाई पानीपत के मैदान में लड़ी जाती रही, उसी तरह साहित्य की लड़ाई लड़नी है तो काशी की धरती पर आना होगा।

डा० निर्मला जैन ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा—जागरण किसी एक के द्वारा एक की बदौलत नहीं होता है, उस समय में कई लोग कई तरह से एक साथ काम कर रहे होते हैं, इसलिए नवजागरण किसने किया, इसका निर्धारण करना ईमानदारी नहीं है।

डॉ० बच्चन सिंह ने कहा कि राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' का भारतेन्दु बाबू से आत्मीय सम्बन्ध था। राजा साहब के योगदान को नकारा नहीं जा सकता लेकिन उन्हें नवजागरण के पुरोधा के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता।

डॉ० अवधेश प्रधान, डॉ० बलिराज पाण्डेय और **डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह** ने वीरभारत तलवार की सम्पादकीय टिप्पणी को सच न मानते हुए उसका विरोध किया। **डॉ० वीरभारत तलवार** ने कहा कि पुस्तक के बारे में इस तरह की विरोधी प्रतिक्रिया अपेक्षित थी, मैंने अपना काम कर दिया है। हिन्दू-मुस्लिम, उर्दू-हिन्दी के सामञ्जस्य की बात जितनी राजाशिवप्रसाद की भाषा करती है उतनी किसी और की नहीं।

राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' के वंशज **कुँअर परमानन्द सिंह** जिनकी प्रेरणा से यह परिचर्चा आयोजित हुई थी, उन्होंने कहा कि राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के बीच गहरी अंतरंगता थी। राजा साहब और भारतेन्दुजी में गुरु-शिष्य सम्बन्ध था और उनका सम्मान करते थे। इस अवसर पर भारतेन्दु बनाम राजा शिवप्रसाद का प्रयोग सर्वथा अनुचित है।

अंत में संचालक **पुरुषोत्तमदास मोदी** ने धन्यवाद प्रकाश करते हुए इस गोष्ठी को ऐतिहासिक कहा। गोष्ठी में नगर के प्रबुद्ध साहित्यकार उपस्थित थे जिन्होंने भी इस परिचर्चा को स्मरणीय बताया।

हिन्दी समारोह

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून द्वारा राजभाषा के व्यावहारिक कार्यान्वयन के उद्देश्य से आयोजित हिन्दी समारोह में अतिथि वक्ता के रूप में डॉ० रामशरण गौड़, विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ० वीरेन्द्र शर्मा तथा अध्यक्ष के रूप में प्रो० नरेश मिश्र सम्मिलित हुए।

संयोजक **डॉ० दिनेश चमोला** ने कहा भारतीय जनमानस व जनजीवन से जुड़ने व जोड़ने की एक सशक्त व जीवंत भाषा मात्र हिन्दी है। हिन्दी हृदय व जीवन मूल्यों की भाषा है।

संस्थान के निदेशक **डॉ० मधुकर ओंकारनाथ गर्ग** ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि राजभाषा स्वाभिमान का प्रतीक है। हमारी प्रारम्भिक से लेकर उच्चतर तकनीकी विषयों की शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी ही रहा है। जिस भाषा में सोचते हैं हमें उसी में स्वयं को अभिव्यक्त करने में सरलता महसूस होती है।

डॉ० रामशरण गौड़ ने कहा हिन्दी में जहाँ हमारे मूल्यों व संस्कारों का सन्निवेश है वहाँ वह भारत माता का भी प्रतिनिधित्व करती है।

डॉ० वीरेन्द्र शर्मा ने कहा कि किसी भी संस्थान अथवा परिवेश में हिन्दी के सुचारु कार्यान्वयन के लिए तीन बातों की आवश्यकता होती है—संकल्प, समर्पण व साहस। हिन्दी व भारतीय भाषाएँ भारत माता की दो आँखें हैं जिनके माध्यम से समग्र भारतीयता दृष्टिगत होती हैं।

प्रो० नरेश मिश्र ने कहा कि भावों का स्रोत चलता है उस प्रवाह से, जहाँ से भाषा का स्फुरण होता है। हमारी भाषा में जो बह रहा है वह मातृभाषा व मातृभूमि की तरह है। भारत भूमि का यह पौधा जगह-जगह पल्लवित व पुष्पित हो रहा है। आज हिन्दी की स्थिति भी यही है।

कहानी प्रतियोगिता का आयोजन

गत वर्ष की भाँति 'राष्ट्रधर्म' मासिक द्वारा 'श्री राधेश्याम चितलांगिया स्मृति अ०भा० कहानी प्रतियोगिता 2005' का आयोजन किया गया है। पुरस्कार राशि प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना क्रमश: 5,000, 3000, 2000 व 1,000 रुपये निश्चित की गयी है।

31 दिसम्बर, 2004 तक प्रवेश-पत्र व नियमावली प्राप्त करने के लिए **सम्पादक, राष्ट्रधर्म, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ-226 004** से सम्पर्क करें।

हिन्दी तुझे सलाम

(महाराष्ट्र) स्थित स्वा० सावरकर महाविद्यालय में प्रा० सोनवणे राजेन्द्र 'अक्षत' द्वारा सम्पादित 'लोकयज्ञ' का दूसरा राष्ट्रीय काव्य विशेषांक का लोकार्पण हुआ। लोकार्पण समारोह में प्रो० हणमंत राव पाटील, डॉ० सुधाकर राव शेडगे तथा महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ० जी०एम० कुलकर्णी द्वारा दीप प्रज्ज्वलन कर सरस्वती पूजन किया। 'लोकयज्ञ' काव्य विशेषांक में विभिन्न राज्यों से आयीं 75 उत्कृष्ट कविताएँ प्रकाशित की गयी हैं। बीड ऐसे अहिन्दीभाषी क्षेत्र से प्रकाशित 'लोकयज्ञ' का कविता विशेषांक की भावना और राष्ट्रभाषा का मानक प्रस्तुत करती है।

लखनऊ पुस्तक मेला

लखनऊ पुस्तक मेले (1-10 अक्टूबर 2004) में पाठकों की रुचि अब गम्भीर साहित्य की ओर बढ़ रही है—आध्यात्मिक साहित्य, जीवन-चरित आदि। खान-पान, बनाव शृंगार, व्यक्तित्व विकास इन पर इतनी सामग्री पत्र-पत्रिकाओं में निकलती है कि अब पुस्तक रूप में पढ़ना नहीं चाहते।

मॉरीशस में हिन्दी

प्रवासी भारतीयों के देश मॉरीशस में हिन्दी का प्रचार-प्रसार इतना बढ़ गया है कि वहाँ की स्थानिक भाषा फ्रेंच और हिन्दी की लोकप्रियता घट गयी है, इनकी पुस्तकों का प्रकाशन और इनके पाठकों की संख्या भी घट रही है। रेडियो और टी०वी० चैनलों पर भी अधिकाधिक हिन्दी कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं।

साहित्य संगम, सूरत की अनोखी योजना

सूरत गुजरात की प्रमुख प्रकाशन संस्था 'साहित्य संगम' ने प्रान्तीय भाषाओं के साहित्य के आदान-प्रदान के लिए प्रतिवर्ष गुजरात के अग्रिम पंक्ति के छह लेखकों, चिंतकों, कवियों, नाट्यकारों, हास्यकारों की कृतियाँ गुजराती के साथ-साथ हिन्दी, मराठी और

अंग्रेजी में प्रकाशित करने का निश्चय किया है। इस योजना के अन्तर्गत छह पुस्तकों का पहला सेट प्रकाशित हुआ है। साहित्य संगम और साहित्य संकुल दोनों लेखकों द्वारा संचालित गुजरात के प्रतिष्ठित प्रकाशन संस्थान हैं। 'साहित्य संगम' के संचालक श्री नानुभाई नायक गुजरात के लब्धप्रतिष्ठित लेखक, कवि एवं पत्रकार हैं। 'अच्छी सरकार कैसी हो?' तथा 'संविधान संशोधन सम्बन्धी सुझाव' शीर्षक आपकी दो पुस्तकों में लोकशाही-शासन पद्धति के निर्वहण विषय पर हैं, जो अत्यन्त लोकप्रिय हैं। संविधान समीक्षा आयोग ने इन दोनों पुस्तकों से अनेक सुझावों को स्वीकार किया है।

गाँधी, गंगा और गिरिराज

गाँधी, प्रो० यशपाल एवं रामशंकर सिंह

''गाँधी, गंगा और गिरिराज हिमालय के बिना भारत की कल्पना नहीं की जा सकती है। गंगा सहित नदियाँ नाले बन रही है, ग्लेशियर के पिघलने से पर्वतराज हिमालय भी खतरे में हैं।'' उक्त विचार नई दिल्ली में स्थित राजघाट पर गाँधी, गंगा और गिरिराज राष्ट्रीय संगोष्ठी में डॉ० एस०एन० सुब्बाराव ने गंगा रक्षा आन्दोलन के सन्दर्भ में व्यक्त की। पर्यावरणविद् एवं वैज्ञानिक पद्मश्री डॉ० विजय भाटकर ने गंगा को प्रदूषण से बचाने हेतु नवीन कार्य योजना की आवश्यकता बतायी। इस अवसर पर 'गाँधी, गंगा और गिरिराज' पुस्तक का लोकार्पण किया गया। दो दिवसीय इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का संचालन रक्षत गंगाम् आन्दोलन के संस्थापक महासचिव रामशंकर सिंह ने किया।

धन धन मातु गङ्ग

डॉ० भानुशंकर मेहता

प्रथम संस्करण : 2004

ISBN : 81-7124-376-2

विश्वविद्यालय प्रकाशन

वाराणडॉ० रामद

जीवन के आठ 50.00

जड़ों से जुड़े लेखक हैं डॉ० रामदरश मिश्र

—कमलेश्वर

डॉ० रामदरश मिश्र दरअसल जड़ों से जुड़े लेखक हैं, पत्तों के लेखक नहीं। जड़ें बनी रहती हैं तो पुराने पत्ते झरते रहने के बावजूद नए-नए पत्ते आते रहते हैं। डॉ० मिश्र भी इसी तरह ही एक सदाबहार लेखक हैं क्योंकि वे गाँव से जुड़े हैं, संस्कारों और मूल्यों से जुड़े हैं। 80 वर्ष के होने पर भी उनकी सर्जनात्मकता बरकरार है। कमलेश्वर ने अक्षरम् संस्था द्वारा हिन्दी भवन, दिल्ली में 30 सितम्बर को आयोजित कार्यक्रम में अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा। इस अवसर पर डॉ० मिश्र के 80 वर्ष पूरे होने पर उन पर केन्द्रित 'अक्षरम् गोष्ठी' पत्रिका के 'सम्मान अंक' का लोकार्पण कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध विधिवेत्ता-चिंतक डॉ० लक्ष्मीमल सिंघवी ने किया।

इस अवसर पर भारतीय ज्ञानपीठ के निदेशक व 'नया ज्ञानोदय' के सम्पादक डॉ० प्रभाकर श्रोत्रिय, सुप्रसिद्ध कवि डॉ० बलदेव वंशी, प्रसिद्ध गीतकार-पत्रकार श्री बालस्वरूप राही, सुपरिचित कवि-कथाकार डॉ० सीतेश आलोक तथा 'अक्षरम् संगोष्ठी' पत्रिका के सम्पादक श्री नरेश शांडिल्य ने डॉ० रामदरश मिश्र के व्यक्तित्व और कृतित्व पर अपने विचार व्यक्त किए। डॉ० रामदरश मिश्र और उनकी पत्नी सरस्वती मिश्र ने अपने जीवन से जुड़े कुछ रोचक संस्मरण सुनाकर कार्यक्रम को सरसता प्रदान की।

दुर्गाप्रसाद श्रेष्ठ को सुभद्राकुमारी चौहान शताब्दी सम्मान

हिन्दी एवं नेपाली भाषा के साहित्यकार **दुर्गाप्रसाद श्रेष्ठ** को जैमिनी अकादमी, पानीपत (हरियाणा) में आयोजित सुभद्राकुमारी चौहान शताब्दी समारोह के अवसर पर 4 अक्टूबर को 'सुभद्राकुमारी चौहान शताब्दी सम्मान' प्रदान किया गया।

साहित्यकार दुर्गाप्रसाद श्रेष्ठ उत्तर प्रदेश सरकार से लेकर नेपाल के स्व० नरेश वीरेन्द्र द्वारा सम्मानित किए जा चुके हैं।

ब्रिटिश लेखक को बुकर पुरस्कार

ब्रिटिश लेखक **एलन हॉलिंगहर्स्ट** को इस वर्ष प्रकाशित उनके चौथे उपन्यास 'द लाइन ऑफ ब्यूटी' को वर्ष 2004 के बुकर पुरस्कार के लिए चयन किया गया है। इसके पूर्व उनके तीन उपन्यास—द स्वीमिंग पूल लाइब्रेरी (1988), द फोल्डिंग स्टार (1994) तथा 'द स्पेल' (1988) प्रकाशित हो चुके हैं। चारों उपन्यास ब्रिटिश समाज में विद्यमान समलैंगिक सम्बन्धों पर आधारित हैं। आज पाश्चात्य समाज में व्याप्त मानवीय विकृतियाँ साहित्य का विषय बन रही हैं, भारतीय साहित्य पर भी इनका प्रभाव पड़ने में अब देर नहीं है।

विश्व में लोकप्रिय होती 'हिंगलिश'

भारत में अंग्रेजी के प्रभाव के कारण हिन्दी भाषा का स्वरूप बदल रहा है, लिखने बोलने में हिन्दी के साथ अंग्रेजी शब्दों का धड़ल्ले से प्रयोग हो रहा है, इस प्रकार हिन्दी-अंग्रेजी के संयोग से 'हिंगलिश' भाषा का सृजन हो रहा है। यही स्थिति विदेशों में प्रवासी-भारतीयों के कारण है, अंग्रेजीभाषी देश में प्रवासी भारतीय अपने देशज हिन्दी शब्दों का प्रयोग बात-बात में करते हैं, इससे उस देश के निवासी उन शब्दों का प्रयोग करने लगे हैं। यही कारण है ब्रिटेन से प्रकाशित शब्दकोशों में रोजमर्रा के हिन्दी शब्द प्रविष्ट होते जा रहे हैं। पहले अंग्रेजी ने हमारे देश को प्रभावित किया और अब भारतीय भाषा परोक्ष रूप से अंग्रेजी को प्रभावित कर रही है।

उत्तर भारत में उद्योग लगाना है राजनीति करनी है तो हिन्दी सीखो

डीएमके नेता और संचार मंत्री दयानिधि मारन की समझ में अब आ रहा है कि यदि तमिलनाडु या कर्नाटक के उद्यमियों को दिल्ली या उत्तर भारत में उद्योग लगाना है तो उन्हें हिन्दी सीखनी होगी और यदि उत्तर भारत में अपनी राजनीतिक पैठ बनानी है तो भी हिन्दी सीखनी ही होगी। जिस भाषा का तमिलनाडु में अब तक विरोध होता रहा, अब समझा जा रहा है कि भाषायी विरोध विकास को अवरुद्ध करता है। चलिए देर से ही सही, समझ तो आयी। दक्षिण और उत्तर की दूरी दूर होने में अब देर नहीं है—नदियों से जोड़ने की योजना बन रही है। दिल भी जुड़ेंगे और दक्षिण भारतीय और उत्तर भारतीय का भेद समाप्त होगा।

काश! नागरी प्रचारिणी सभा के तीन दशक के पदाधिकारियों ने सभा को अपनी कन्या समझा होता!

काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने 'बृहत हिन्दी शब्दसागर' का प्रकाशन कराया था। डॉ० श्यामसुन्दरदास इसके प्रधान सम्पादक थे।

संस्थान ने प्रकाशन की सफलता पर काशी में एक समारोह का आयोजन किया। तय किया गया कि प्रधान सम्पादक तथा सहयोगीजनों को एक-एक शॉल, घड़ी तथा कलम भेंट की जाएगी।

श्यामसुन्दरदासजी की पत्नी को यह जानकारी मिली। समारोह वाले दिन उन्होंने पतिदेव से पूछा, 'क्या आप भी दुशाला, घड़ी तथा कलम उपहार में लेंगे?' डॉक्टर साहब ने उत्तर दिया, 'जब सभा भेंट कर रही है, तो जरूर लेंगे।'

धर्मपरायण पत्नी ने कहा, 'आप प्राय: कहा करते हैं कि राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिए समर्पित नागरी प्रचारिणी सभा मेरी बेटी (कन्या) है। उस लिहाज से आपका उससे कुछ भी लेना धर्मविरुद्ध है।'

डॉक्टर साहब पत्नी की धर्मभावना को जानकर गदगद हो उठे। उन्होंने समारोह में उपहार लेने से इनकार कर दिया और बोले, 'मैं कन्या की कोई वस्तु कैसे स्वीकार कर सकता हूँ।'

—शिवकुमार गोयल

भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 5 | **नवम्बर** 2004 | **पूरक अंक** 11

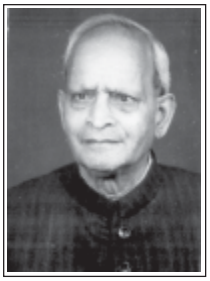

पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी आचार्य

एम०ए० (संस्कृत, हिन्दी),
एम०ओ०एल०, डी०फिल् (प्रयाग); विद्याभास्कर,
साहित्यरत्न, व्याकरणाचार्य, पी०ई०एस० (अ०प्रा०)
निदेशक, विश्वभारती अनुसन्धान परिषद्
ज्ञानपुर (वाराणसी)

''संस्कृत जगत् के मूर्धन्य विद्वान् डॉ० कपिलदेव द्विवेदी ने वैदिक एवं संस्कृत साहित्य पर अनेक पुस्तकें लिखकर संस्कृत वाङ्मय को नवीन दिशा दी है।

संस्कृत व्याकरण, भाषाविज्ञान एवं अनेक भाषाओं के विद्वान् डॉ० द्विवेदी ने अपने अध्यापन, सशक्त लेखनी तथा व्याख्यानों के माध्यम से देश-विदेश में संस्कृत भाषा, वेद एवं भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है।''

— अटलबिहारी वाजपेयी
पूर्व प्रधानमंत्री, भारत सरकार

पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी की सारस्वत-सपर्या का मैं सदैव प्रशंसक रहा। मैं उनके साहित्य का छात्रजीवन में पाठक भी रहा। डॉ० द्विवेदी ने अपनी विविधकोटिक कृतियों से विद्यार्थियों, अध्यापकों, कोविदों एवं सामान्य संस्कृतानुरागी सहृदयों का एक ही साथ अनुरञ्जन एवं उपकार किया है। 'यावज्जीवमधीते विप्रः' का उदात्त आदर्श प्रो० द्विवेदी पर जिस सच्चाई के साथ चरितार्थ होता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है।

डॉ० द्विवेदी की सारस्वत व्यक्तित्व बहुमुखी रहा है। वह प्रतिभापटिष्ठ कवि भी हैं, तलस्पर्शी समालोचक भी। सदाशय चिन्तक भी हैं एवं सर्वाभ्युदयाशंसी आचार्य भी। पूर्वाग्रहमुक्त है उनका विद्वद्व्यक्तित्व!

— प्रो० राजेन्द्र मिश्र
कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी

संस्कृत भाषा भारतीय एकता की सूत्रधार है

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है। यह भारतीय संस्कृति ही नहीं, अपितु विश्व-संस्कृति की आधारशिला है। भारत का समस्त प्राचीन वैभव और गौरव संस्कृत भाषा में ही सुरक्षित है। संस्कृत भाषा ही भारतीय भाषाओं की जननी है। आज भी भारतीय भाषाओं का उच्च साहित्य अपने दार्शनिक और आध्यात्मिक चिन्तन के लिए संस्कृत पर ही निर्भर है। सभी भारतीय भाषाओं में 50 से 60 प्रतिशत शब्दावली संस्कृत भाषा से ली गई है। नए शब्दों के निर्माण के लिए भी संस्कृत का ही आश्रय लिया जाता है। दक्षिण की द्रविड़ भाषाओं में भी संस्कृत का पूर्ण प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। तेलुगु, मलयालम आदि में भी 40 से 50 प्रतिशत शब्दावली संस्कृत निष्ठ है। संस्कृत ने ही पाश्चात्य देशों में नवचेतना जागृत की है। वेद और संस्कृत साहित्य के अध्ययन से यूरोप और अमेरिका में नवीन चेतना जागृत हुई है। परिणामस्वरूप उन्होंने अनेक विश्वविद्यालयों में संस्कृत की स्थापना की है।

संस्कृत संस्कृति का आधार है। संस्कृति मनुष्य की आधारशिला है। बिना आधारशिला के मनुष्य जीवन बिना नीव के भवन के समान है जो कभी भी धराशायी हो सकता है। संस्कृत और संस्कृति आधारशिला का कार्य करते हैं। जहाँ संस्कृत है, वहाँ आचार शिक्षा, कर्त्तव्यनिष्ठा, सत्यनिष्ठा और नैतिक शिक्षा की स्थापना है जहाँ संस्कृत है वहाँ आचार शिक्षा, नैतिक शिक्षा पर बल नहीं है। अतएव पाश्चात्य जगत् भी नैतिक मूल्यों के लिए संस्कृत भाषा और भारतीय संस्कृति का आश्रय ले रहे हैं।

आज कम्प्यूटर का युग है। सभी वैज्ञानिक एक स्वर से यही स्वीकार करते हैं कि इस वैज्ञानिक युग ने कम्प्यूटर के लिए सबसे उत्तम भाषा संस्कृत ही है। इस भाषा की सूत्रविधि ने सभी वैज्ञानिकों का ध्यान आकृष्ट किया है। इस विधि को अपनाने से कम्प्यूटर को विशेष लाभ होगा।

संस्कृत भारतीय एकता का प्रतीक है। संस्कृत ही वह भाषा है जो सारे भारतीय भाषाओं को और पूरे भारतवर्ष को एकता के सूत्र में बाँधती है। संस्कृत के बिना राष्ट्रीय एकता की कल्पना नहीं की जा सकती। संस्कृत की उपेक्षा का ही परिणाम है कि आज राष्ट्रीय एकता और अखण्डता में कमी आयी है। संस्कृत की उपेक्षा के कारण ही मानवीय मूल्यों में भी चारित्रिक ह्रास हुआ है।

भारतीय और पाश्चात्य मूल्यों में मौलिक अन्तर यह है कि पाश्चात्य संस्कृति भौतिकवाद को महत्त्व देती है और उसके कारण भौतिक उन्नति होने पर भी आज मानव को सुख शान्ति नहीं है और वे शान्ति के लिए भारत की ओर देख रहे हैं। भारतीय संस्कृति अध्यात्मपरक है, वह नैतिक मूल्यों को प्रमुखता देते हुए भौतिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है।

प्राचीन समय में संस्कृत भाषा का आश्रय लेकर ही न केवल दार्शनिक मनन चिन्तन ही अग्रसर हुआ था अपितु गणित, ज्योतिष, मनोविज्ञान, चिकित्साशास्त्र आदि में असाधारण उन्नति की थी। आज विज्ञान-जगत् आयुर्वेदिक अनुसन्धानों को महत्त्व दे रहा है।

विश्व संस्कृति की सुरक्षा के लिए आज संस्कृत की आवश्यकता है। विश्व शान्ति और और विश्व बन्धुत्व के लिए संस्कृत ही सर्वोत्तम आश्रय है। **—डॉ० कपिलदेव द्विवेदी**

पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी

डॉ० द्विवेदी का जन्म एक प्रतिष्ठित वैश्य परिवार में हुआ। आपके पिता श्री बलरामदासजी और माता श्रीमती वसुमती देवी थीं। आपके पिता एक त्यागी, तपस्वी समाजसेवी थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन देशसेवा में लगाया। पिताजी स्वतंत्रता संग्राम-सेनानी थे। वे तीन बार कांग्रेस के आन्दोलन में जेल गये। आपकी माताजी भी स्वतंत्रता सेनानी थीं। डॉ० द्विवेदीजी का जन्म 6 दिसम्बर 1918 को हुआ। आपके पिताजी ने आपके जन्म से पहले दो निर्णय लिए थे कि बालक का नाम कपिलमुनि के नाम पर कपिलदेव रखा जाएगा और उसे शिक्षा के लिए गुरुकुल भेजा जाएगा। पूर्व निर्णय के अनुसार बालक का नाम कपिलदेव रखा गया और कक्षा 4 के अध्ययन के बाद गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर, हरिद्वार में संस्कृत की उच्च शिक्षा के लिए भेजा गया।

शिक्षा-दीक्षा—1928 से 1939 तक गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर में शिक्षा प्राप्त की। वहाँ रहते हुए आपने यजुर्वेद और सामवेद दो वेद कंठस्थ किए और उसके परिणामस्वरूप गुरुकुल से द्विवेदी की उपाधि प्रदान की गई। आपने गुरुकुल में रहते हुए बंगला और उर्दू भाषा भी सीखी। गुरुकुल में रहते हुए आप 1939 में स्वतंत्रता संग्राम के अंग हैदराबाद आर्य-सत्याग्रह आन्दोलन में 6 मास कारावास में रहे। गुरुकुल में रहते हुए आपने शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की और आपको गुरुकुल की उपाधि विद्याभास्कर प्राप्त हुई। सभी परीक्षाओं में आप प्रथम श्रेणी में प्रथम रहे हैं।

पारिवारिक जीवन—डॉ० द्विवेदी का जीवन अत्यन्त संघर्षपूर्ण रहा है। उन्होंने जीवनभर घोर संघर्ष किया है। आपका विवाह 1953 में चन्दौसी निवासी श्री रामशरणदास की पुत्री ओम्शान्ति से हुआ। आपका गृहस्थ जीवन सुखी रहा है। आपके पाँच पुत्र और दो पुत्रियाँ हैं। प्राय: सभी एम०ए०/एम०एस-सी०, पी-एच०डी० हैं। आपकी पत्नी का निधन 28 दिसम्बर 1973 को प्रात: 5 बजे हुआ।

शैक्षणिक योग्यता—आपने पंजाब विश्वविद्यालय से 1946 में प्रथम श्रेणी में प्रथम रहते हुए एम०ए० संस्कृत की परीक्षा उत्तीर्ण की। वहीं से एम०ओ०एल० की उपाधि भी आपको प्राप्त हुई। तदनन्तर इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में डॉ० बाबूराम सक्सेना के निर्देशन में भाषाविज्ञान विषय में 1949 में डी०फिल० की उपाधि प्राप्त की। आपने संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से व्याकरण विषय में आचार्य की उपाधि प्रथम श्रेणी में सर्वप्रथम रहते हुए उत्तीर्ण की। आपने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से आचार्य डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी के निर्देशन में प्रथम श्रेणी में एम०ए० (हिन्दी) की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। आपने अनेक भाषाओं में विशेष योग्यता प्राप्त की है। प्रयाग विश्वविद्यालय से आपने जर्मन, फ्रेंच, रूसी, चीनी आदि भाषाओं में प्रोफिसिएन्सी परीक्षा उत्तीर्ण की है। इसके अतिरिक्त पालि, प्राकृत, बंगला, मराठी, गुजराती, पंजाबी और उर्दू में भी आपने विशेष दक्षता प्राप्त की है।

शैक्षणिक सेवाएँ—आप 1940 से 1944 तक नारायण स्वामी हाईस्कूल, रामगढ़, नैनीताल में संस्कृत-शिक्षक रहे। तदनन्तर 1950 से 1954 तक सेंट एण्ड्रयूज कालेज, गोरखपुर में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष रहे। नवम्बर 1954 से मार्च 1965 तक देवसिंह बिष्ट स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नैनीताल में संस्कृत विभागाध्यक्ष रहे। मार्च 1965 से जुलाई 1977 तक काशी-नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर भदोही में संस्कृत विभागाध्यक्ष, उपाचार्य एवं प्राचार्य पदों पर रहे। अगस्त 1977 से जून 1978 तक राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोपेश्वर (चमोली) में प्राचार्य रहे। वहाँ से 30 जून 1978 को राजकीय सेवा से अवकाश प्राप्त किया। तदनन्तर 1980 से 1992 तक गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) में कुलपति रहे।

विशिष्ट सेवा—डॉ० द्विवेदी की गणना विश्व के प्रमुख प्राच्यविद्याविदों, भाषाविदों औद वेदविदों में की जाती है। आप संस्कृत भाषा के सरलीकरण पद्धति के उन्नायक एवं प्रवर्तक माने जाते हैं। संस्कृत को लोकप्रिय बनाने में आपका महत्त्वपूर्ण योगदान है। वेदों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए आपने वेदामृतम् ग्रन्थमाला के 40 भागों का प्रकाशन किया है।

विदेश यात्रा—आप 5 बार विदेश यात्रा कर चुके हैं। आपने भारतीय संस्कृति के प्रचार के लिए 1976, 1989, 1990, 1991 और 1993 में विदेश यात्रा की है। इनमें ये देश सम्मिलित हैं—अमेरिका (उत्तरी और दखिण), कनाडा, इंग्लैण्ड, जर्मनी, हालैण्ड, फ्रांस, इटली, स्विट्जरलैण्ड, सुरीनाम, गुयाना, मारीशस, केनिया, तंजानिया और सिंगापुर।

योग-साधना—डॉ० द्विवेदी एक उच्चकोटि के साधक हैं। आपने 1942 में योगासनों की शिक्षा प्राप्त की थी। तब से अब तक नियमित रूप से योगाभ्यास करते हैं। वे आज भी 86 वर्ष की आयु में पूर्ण स्वस्थ एवं निरोग हैं। आपने अपने अनुभव 'साधना और सिद्धि' ग्रन्थ में दिए हैं।

सम्मान एवं अभिनन्दन—संस्कृत साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए आपको भारत सरकार ने सन् 1991 में 'पद्मश्री' अलंकरण से विभूषित किया। आपको 1992 में उ०प्र० संस्कृत संस्थान द्वारा संस्कृत साहित्य में विशिष्ट योगदान हेतु 25 हजार रुपये का विशिष्ट पुरस्कार प्रदान किया गया। आपको उ०प्र० हिन्दी संस्थान से 1993 में वीरबल साहनी पुरस्कार से, दिल्ली संस्कृत अकादमी से 1996 में मौलिक संस्कृत महाकाव्य 'आत्मविज्ञानम्' रचना पर पण्डितराज जगन्नाथ पुरस्कार, वेद-पण्डित पुरस्कार गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा 1991 में, वेदपण्डित पुरस्कार अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन द्वारा 1995 में, वेद-वेदाङ्ग पुरस्कार 20,000 रुपये आर्य समाज सान्ताक्रूज मुम्बई द्वारा 2000 में तथा उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा 'वेदों में विज्ञान' ग्रन्थ पर 20,000 रुपये के पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। आपकी कृतियों पर विभिन्न प्रदेशों तथा संस्थानों द्वारा अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

सुरीनाम के राष्ट्रपति ने 1990 में और मारीशस के राष्ट्रपति ने 1991 में आपका विशेष सम्मान किया था। विदेशों में लन्दन यूनिवर्सिटी के प्राच्य विभाग ने 1989 में, फ्रैंकफर्ट यूनिवर्सिटी के हिन्दी विभाग ने 1989 में, ईस्ट-वेस्ट यूनिवर्सिटी, न्यूयार्क ने 1990 में, टोरंटो यूनिवर्सिटी संस्कृत विभाग ने 1990 में, सुरीनाम यूनिवर्सिटी के मेडिकल कालेज ने 1990 में, गुयाना यूनिवर्सिटी के साइंस विभाग ने 1990 में आपका सार्वजनिक अभिनन्दन किया।

पुरस्कार—आपकी इन रचनाओं पर उत्तर प्रदेश एवं केन्द्रीय सरकार से पुरस्कार प्राप्त हुए हैं—(1) अर्थविज्ञान और व्याकरणदर्शन 1952, (2) संस्कृत व्याकरण 1972, (3) संस्कृत निबन्धशतकम् 1977, (4) राष्ट्रगीतांजलि: 1981, (5) भक्ति-कुसुमाञ्जलि: 1990, (6) अथर्ववेद का सांस्कृतिक अध्ययन 1991, (7) वेदों में आयुर्वेद 1995, (8) आत्मविज्ञानम् 1995, (9) वेदों में राजनीतिशास्त्र 1997, (10) वेदों में विज्ञान 2004।

पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी के प्रमुख ग्रन्थ

शोध-ग्रन्थ

The Essence of the Vedas
पृष्ठ : 315 + 12, मूल्य : 200.00

A Cultural Study of Atharvaveda
पृष्ठ : 569 + 12, मूल्य : 300.00

वेदों में आयुर्वेद पृष्ठ : 296 + 16, मूल्य : 200.00

वेदों में राजनीतिशास्त्र
पृष्ठ : 352 + 16, मूल्य : 200.00

वेदों में विज्ञान पृष्ठ : 304 + 16, मूल्य : 250.00

वैदिक दर्शन पृष्ठ : 220 + 16, मूल्य : 250.00

अथर्ववेद का सांस्कृतिक अध्ययन
पृष्ठ : 512 + 14, मूल्य : 250.00

साधना और सिद्धि पृष्ठ : 292 + 12, मूल्य : 250.00

शर्मण्याः प्राच्यविदः पृष्ठ : 120 + 8, मूल्य : 40.00

राष्ट्रगीतांजलिः पृष्ठ : 206 + 10, मूल्य : 25.00

भक्ति-कुसुमांजलिः पृष्ठ : 160, मूल्य : 50.00

आत्मविज्ञानम् (महाकाव्यम्)
पृष्ठ : 195 + 8, मूल्य : 75.00

गीतांजलिः पृष्ठ : 112, मूल्य : 75.00

अभिनन्दन-ग्रन्थ

अभिनन्दन भारती एवं संस्कृत वाङ्मय में पर्यावरण चेतना
पृष्ठ : 396 + 12, मूल्य : 300.00

वेदामृतम् ग्रन्थमाला

सुखी जीवन	50.00
सुखी गृहस्थ	50.00
सुखी परिवार	50.00
सुखी समाज	35.00
आचार शिक्षा	50.00
नीति शिक्षा	55.00
वेदों में नारी	35.00
वैदिक मनोविज्ञान	55.00
यजुर्वेद-सुभाषितावली	35.00
सामवेद-सुभाषितावली	35.00
अथर्ववेद-सुभाषितावली	75.00
ऋग्वेद-सुभाषितावली	120.00

अन्य संस्कृत ग्रन्थ

अभिज्ञान-शाकुन्तलम् (अनुवाद एवं व्याख्या)	110.00
उत्तर-रामचरितम् (अनुवाद एवं व्याख्या)	115.00
प्रतिमानाटकम् (अनुवाद एवं व्याख्या)	48.00
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास	110.00

द्विवेदी सन्तति के प्रमुख ग्रन्थ

स्मृतियों में राजनीति और अर्थशास्त्र	*डॉ० प्रतिभा आर्य*	150
स्मृतियों में नारी	*डॉ० भारती आर्य*	150
नाट्यशास्त्र में आङ्गिक अभिनय	*डॉ० भारतेन्दु द्विवेदी*	125

संस्कृत छात्रों के लिए वैज्ञानिक पद्धति से लिखी गई संस्कृत व्याकरण, अनुवाद, निबन्ध, भाषा विज्ञान तथा वैदिक साहित्य की अनुपम पुस्तकें

संस्कृत शिक्षा (भाग 1 से 3)

(संस्कृत की प्रारम्भिक कक्षाओं के लिए)

संस्कृत के प्रारम्भिक छात्रों के लिए गृह कार्य (Desk Work) के रूप में लिखी गई ये पुस्तकें अभ्यास-पुस्तिकाओं के रूप में हैं। इनमें सरल रूप में संस्कृत भाषा में लिखने और बोलने का अभ्याय कराया गया है। संस्कृत के प्रारम्भिक छात्रों के लिए ये अत्यन्त उपयोगी पुस्तिकाएँ हैं।

भाग 1	12 रुपये
भाग 2	12 रुपये
भाग 3	15 रुपये
भाग 4, 5	(यंत्रस्थ)

प्रारम्भिक रचनानुवाद-कौमुदी

(हाईस्कूल और मध्यमा के छात्रों के लिए)

यह रचनानुवाद-कौमुदी की पद्धति पर लिखी गई प्रारम्भिक कक्षाओं के लिए संस्कृत-व्याकरण, अनुवाद और निबन्ध की आदर्श पुस्तक है। इसमें केवल 30 अभ्यास, 80 संस्कृत के नियम और 600 शब्दों के द्वारा संस्कृत का ज्ञान कराया गया है। इसके अध्ययन से सामान्य हिन्दी का ज्ञान रखने वाला कोई भी व्यक्ति 3 मास में सरल और शुद्ध संस्कृत लिखना और बोलना सीख सकता है। इसमें हाईस्कूल में निर्धारित सभी शब्दों और धातुओं के रूप दिए गए हैं। साथ ही मुख्य सन्धियों का पूरा विवरण दिया गया है। इसमें परीक्षा के लिए उपयोगी 20 विषयों पर संस्कृत में निबन्ध भी दिए गए हैं। पुस्तक की 2 लाख से अधिक प्रतियों का बिकना इसकी लोकप्रियता का परिचायक है।

पृष्ठ संख्या 152 18 रुपये

रचनानुवाद-कौमुदी

(इण्टरमीडिएट, बी०ए० और शास्त्री के छात्रों के लिए)

यह वैज्ञानिक पद्धति से लिखी गई संस्कृत व्याकरण, अनुवाद और निबन्ध की आदर्श पुस्तक है। इसमें 200 नियमों एवं 1500 शब्दों के द्वारा 60 अभ्यासों में संस्कृत व्याकरण के विशेष उपयोगी नियमों की शिक्षा दी गई है, इसके अध्ययन से सामान्य हिन्दी-ज्ञान वाला व्यक्ति भी 3 या 4 मास में सरल संस्कृत लिख और बोल सकता है। इसमें बी०ए० स्तर तक के लिए उपयोगी सभी शब्दरूप और धातुरूप दिए गए हैं, साथ ही संक्षिप्त धातुकोश, प्रत्ययविचार, संधिविचार, 20 सरल संस्कृत में निबन्ध, छन्द-परिचय और पारिभाषिक शब्दों का विवरण दिया गया है। इसकी 2 लाख से अधिक प्रतियों का बिकना इसकी लोकप्रियता का परिचायक है।

पृष्ठ संख्या 272 + 16 मूल्य : 50 रुपये

प्रौढ-रचनानुवाद कौमुदी

(एम०ए० और आचार्य के छात्रों के लिए)

यह वैज्ञानिक पद्धति से लिखी गई संस्कृत व्याकरण, अनुवाद और निबन्ध की आदर्श पुस्तक है, यह संस्कृत के उच्चस्तरीय ज्ञान के लिए अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है। इसमें 300 नियमों और 1500 शब्दों के द्वारा 60 अभ्यासों में समस्त संस्कृत व्याकरण की शिक्षा दी गई है। इसमें दैनिक प्रयोग के शब्दों का भी संकलन किया गया है। भोजन, अन्न-पान, प्रसाधन, मिष्टान्न, आभूषण, खेलकूद, फल-फूल आदि से संबद्ध सैकड़ों शब्दों का प्रयोग करना सिखाया गया है।

प्रत्येक अभ्यास में 25-30 मुहावरों का प्रयोग करना सिखाया गया है। उच्चस्तरीय संस्कृत के ज्ञान के लिए आवश्यक समस्त संस्कृत व्याकरण का इसमें समावेश किया गया है। इसमें 100 शब्दों के रूप और 100 धातुओं के सभी लकारों के रूप दिए गए हैं। अन्य 500 धातुओं के 10 लकारों के संक्षिप्त रूप दिए गए हैं। इसमें 75 सन्धि-नियम दिए गए हैं। 100 धातुओं के आदि प्रत्यय लगाकर बनने वाले रूपों का चार्ट भी दिया गया है। पुस्तक में 24 अति महत्त्वपूर्ण 20 विषयों पर सरल संस्कृत में निबन्ध दिए गए हैं। विविध विषयों पर लगभग 2000 सुभाषित विषयानुसार दिए गए हैं। ग्रन्थ के अन्त में पारिभाषिक शब्दकोश और हिन्दी-संस्कृत शब्दकोश भी दिया गया है। इसके 11 संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

पृष्ठ संख्या 440 + 12 सजिल्द : 180 रुपये
अजिल्द : 100 रुपये

संस्कृत व्याकरण एवं लघु-सिद्धान्त-कौमुदी

(एम०ए० संस्कृत, शास्त्री आदि के लिए)

संस्कृतभाषा के व्याकरण के ज्ञान के लिए यह सर्वोत्तम ग्रन्थ है। इसमें भूमिका में संस्कृत व्याकरणशास्त्र का विस्तृत इतिहास दिया गया है, सम्पूर्ण लघु-सिद्धान्तकौमुदी हिन्दी अनुवाद और विस्तृत व्याख्या के साथ दी गई है। सिद्धान्तकौमुदी से कारक-प्रकरण व्याख्या सहित दिया गया है। साथ ही ग्रन्थ की उपयोगिता को बढ़ाने के लिए संक्षिप्त वैदिक व्याकरण, स्वर-सम्बन्धी नियम, वैदिक छन्द-परिचय, संक्षिप्त प्राकृत व्याकरण और पारिभाषिक शब्दकोश भी दिया गया है। संस्कृत व्याकरण की सरल और वैज्ञानिक व्याख्या के लिए यह ग्रन्थ आदर्श है।

पृष्ठ संख्या 560 मूल्य : सजिल्द 300 रुपये
अजिल्द 170 रुपये

संस्कृत-निबन्ध-शतकम्

(एम०ए०, आई०ए०एस०, पी०सी०एस०, आचार्य आदि के लिए)

इसमें सरल एवं सुललित भाषा में उच्चस्तरीय परीक्षाओं के लिए उपयुक्त 100 विषयों पर संस्कृत में निबन्ध दिए गए हैं। इसमें वैदिक एवं शास्त्रीय विषयों पर 10, दार्शनिक विषयों पर 6, काव्यशास्त्रीय 11, साहित्यिक 15, भाषाशास्त्रीय 5, सांस्कृतिक 9, सामाजिक 5, आर्थिक 6, राष्ट्रीय 8, शिक्षाशास्त्रीय 8 एवं विविध विषयों पर 20 निबन्ध दिए गए हैं। पुस्तक सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

पृष्ठ संख्या 324 मूल्य : 80 रुपये

अर्थविज्ञान और व्याकरण दर्शन

(अर्थविज्ञान-विषयक प्रामाणिक शोधग्रन्थ)

यह भाषाशास्त्रीय प्रामाणिक शोधग्रन्थ है। इसमें अर्थविज्ञान (Semantics) विषय पर भारतीय वैयाकरणों के गहन चिन्तन का विशद विवेचन है। पतंजलि के महाभाष्य और भर्तृहरि के वाक्यपदीय का गहन अनुशीलन है। साथ ही अन्य दार्शनिकों के मन्तव्यों का भी विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इसमें 9 अध्यायों में मुख्य रूप से इन विषयों का वर्णन है— शब्द और अर्थ का स्वरूप, अर्थ-विकास, अर्थनिर्णय के साधन, शब्द और अर्थ का सम्बन्ध, शब्दशक्ति, पद और पदार्थ, वाक्य और वाक्यार्थ, स्फोटवाद और अर्थविज्ञान।

पृष्ठ संख्या 370 + 30 मूल्य : 400 रुपये

भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र

(संस्कृत तथा हिन्दी एम०ए० के लिए)

इसमें भाषाशास्त्रीय नवीनतम अनुसंधानों का समन्वय करते हुए भाषाविज्ञान और भाषाशास्त्र का प्रामाणिक एवं सारगर्भित विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इसमें भाषा, ध्वनि-विज्ञान, पद-विज्ञान, वाक्य-विज्ञान, अर्थविज्ञान, विश्व की समस्त भाषाओं का आकृतिमूलक एवं पारिवारिक वर्गीकरण, भारोपीय परिवार, भारतीय आर्यभाषाएँ, स्वनिम, पदिम, रूपिम, आर्थिक, स्वनिम-विज्ञान, भाषाशास्त्र का इतिहास एवं लिपि का इतिहास आदि विषयों का प्रामाणिक विवेचन हुआ है। पुस्तक सभी विश्वविद्यालयों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर लिखी गई है। पृष्ठ संख्या 525

मूल्य : सजिल्द 250 रुपये अजिल्द 120 रुपये

वैदिक साहित्य एवं संस्कृति

(संस्कृत एम०ए० एवं आचार्य आदि के लिए)

यह वैदिक साहित्य-विषयक प्रामाणिक ग्रन्थ है। इसमें वैदिक साहित्य का सर्वांगीण विवेचन प्रस्तुत किया गया है। साथ ही वेदकालीन संस्कृति का भी संक्षिप्त विवेचन किया गया है। इसमें 13 अध्यायों में मुख्य रूप से इन विषयों का प्रतिपादन है— वेदों का महत्त्व, वेदों का रचनाकाल, वेद और भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वान्, वैदिक संहिताएँ, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक ग्रन्थ, उपनिषद् ग्रन्थ, 6 वेदांग— शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष एवं कल्पसूक्त, वैदिक संस्कृति, भूगोल एवं सामाजिक जीवन, वैदिक अर्थव्यवस्था, वैदिक राजनीतिक अवस्था, वैदिक देवों का स्वरूप, वैदिक यज्ञमीमांसा, वैदिक व्याकरण, स्वरप्रक्रिया, वेदों में विज्ञान के सूक्त, वेदों में काव्यसौन्दर्य और ललित कलाएँ।

पृष्ठ सं० 370 + 16 मूल्य : सजिल्द 250 रुपये

छात्र संस्करण 125 रुपये

साधना और सिद्धि

यह योग-साधना पर लिखी गई प्रामाणिक पुस्तक है। इसमें योग-साधना से सम्बद्ध सभी विषयों का विस्तृत विवरण दिया गया है। आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि का विस्तृत विवेचन है। इसमें कुण्डलिनी-जागरण और योग से 50 प्रमुख रोगों के उपचार का विवरण भी दिया गया है।

पृष्ठ : 292 + 12 मूल्य : 250 रुपये

वेदों में विज्ञान

प्रस्तुत ग्रन्थ 11 अध्यायों में विभक्त है। इसमें भौतिकी, रसायन-विज्ञान, वनस्पतिशास्त्र, जन्तु-विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कृषि, गणितशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, जन्तुविज्ञान, पर्यावरण और भूगर्भ-विज्ञान विषयों पर वेदों में उपलब्ध सामग्री को वैज्ञानिक विचारधारा के अनुसार सन्दर्भसहित प्रस्तुत किया गया है। प्रत्येक विषय से संबद्ध मंत्र आदि भावार्थ के साथ दिए गए हैं।

पृष्ठ : 304 + 16 मूल्य : 300 रुपये

लघुसिद्धान्तकौमुदी

मूल्य : 20 रुपये

(समास एवं कारक प्रकरण)

लघुसिद्धान्तकौमुदी

मूल्य : 20 रुपये

(संज्ञा एवं सन्धि प्रकरण)

विश्वविद्यालय प्रकाशन द्वारा प्रकाशित प्रमुख संस्कृत ग्रन्थ

लघुसिद्धान्तकौमुदी *डॉ० मुरलीधर पाण्डेय* 30
लघुसिद्धान्तकौमुदी *डॉ० रामअवध पाण्डेय व डॉ० रविनाथ मिश्र* 40
बालसिद्धान्तकौमुदी *ज्योतिस्वरूप मिश्र* 50
सिद्धान्त-कौमुदी (कारक प्रकरण) *ज्योतिस्वरूप मिश्र, उर्मिला मोदी* 20
पाणिनीय शिक्षा *डॉ० कमलाप्रसाद पाण्डेय* 24
भामिनी विलास का प्रस्ताविक-अन्योक्तिविलास *सं० पं० जनार्दन शास्त्री* 50
अङ्कारप्रस्थान-विमर्श: *डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह* 25
अलङ्कार-दर्पण (साहित्य-दर्पण दशम् परिच्छेद एवं छन्दोमञ्जरी) *डॉ० जनार्दन गङ्गाधर रटाटे* 15
चन्द्रालोक-सुधा एवं छन्दोमञ्जरी-सुधा *विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी* 30
अभिनव रस सिद्धान्त *डॉ० दशरथ द्विवेदी* 40
अभिनव का रस-विवेचन *नगीनदास पारेख* 100
चन्द्रालोक (1 से 4 मयूख) *डॉ० भारतेन्दु द्विवेदी* 40
वक्रोक्तिजीवितम् *डॉ० दशरथ द्विवेदी* 100
रसाभिव्यक्ति *डॉ० दशरथ द्विवेदी* 150
ध्वन्यालोक (दीपशिखा टीका सहित) *डॉ० चण्डिकाप्रसाद शुक्ल यंत्रस्थ*
मृच्छकटिक : शास्त्रीय, सामाजिक एवं राजनीतिक अध्ययन *डॉ० शालग्राम द्विवेदी* 100
उपरूपकों का उद्भव और विकास *डॉ० इन्द्रा चक्रवाल* 100
संस्कृत के प्रतीकात्मक नाटक *डॉ० आशारानी त्रिपाठी* 225
संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास *डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी* 350
संस्कृत साहित्य की कहानी *उर्मिला मोदी* 50
भारतीय दर्शन का सुगम परिचय *डॉ० शिवशंकर गुप्त* 80
भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्व *डॉ० ब्रजवल्लभ द्विवेदी* 80
भारतीय दर्शन : सामान्य परिचय ,, 150

कोश तथा भाषाशास्त्र

संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन *डॉ० भोलाशंकर व्यास* 80
शिवराम त्रिपाठी कृत लक्ष्मीनिवास कोश (उणादि कोश) *डॉ० रामअवध पाण्डेय* 40

वैदिक-साहित्य

वेद व विज्ञान *स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* 180
वेदचयनम् *विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी* 60
ऋङ्मणिमाला *डॉ० हरिदत्त शास्त्री* 45
ऋग्वेदभाष्यभूमिका *डॉ० हरिदत्त शास्त्री* 40

पालि-प्राकृत-अपभ्रंश

पालि-प्राकृत-अपभ्रंश-संग्रह *डॉ० रामअवध पाण्डेय तथा डॉ० रविनाथ मिश्र* 80
पालि-संग्रह ,, 20
पालि-साहित्य का इतिहास *डॉ० कोमलचन्द्र जैन* 25

संस्कृत साहित्य

(मूल ग्रन्थ, समीक्षा सहित)

भुशुण्डि रामायण : कथावस्तु तथा समीक्षा *डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह* 50
भुशुण्डि रामायण (पूर्व खण्ड) *सं० डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह* 200
भर्तृहरिकृत नीतिशतकम् *डॉ० देवर्षि सनाढ्य* 16
शांकरवेदान्ते तत्व-मीमांसा *डॉ० के०पी० सिन्हा* 40
शृंङ्गारमञ्जरी सट्टकम् (श्रीमद्विश्वेश्वर) *सं० बाबूलाल शुक्ल* 20
मुद्राराक्षसम् *सं० डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी* 100
किरातार्जुनीयम (प्रथम सर्ग:) *भारवि रचित* 15
कादम्बरी : कथामुखम् *डॉ० विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी* 40
उत्तररामचरितम् *डॉ० रामअवध पाण्डेय* 120
कठोपनिषद (प्रथम अध्याय) *डॉ० रविनाथ मिश्र* 15
मेघदूतम् (कालिदास) *डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी* 50
दशरूपकम् *पं० रमाशंकर त्रिपाठी* 150
अभिज्ञानशाकुन्तलम् *सं० डॉ० शिवशंकर गुप्त* 80
कुमार संभवम् (प्रथम सर्ग) *डॉ० भारतेन्दु द्विवेदी* 30
तैत्तिरीय प्रातिशाख्यम् *डॉ० कमलाप्रसाद पाण्डेय* 20
ईशवास्योपनिषद *डॉ० भारतेन्दु द्विवेदी* 25

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

प्रमुख ग्रन्थ

मनीषी, संत, महात्मा

अघोरपंथ और संत कीनाराम *डॉ० सुशीला मिश्र* 250.00
शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान *सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव* 150.00
नीब करौरी बाबा के अलौकिक प्रसंग *बच्चन सिंह* 250.00
उत्तराखण्ड की सन्त परम्परा *डॉ० गिरिराज शाह* 150.00
सोमबारी महाराज *हरिश्चन्द्र मिश्र* 50.00
सन्त रैदास *श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला* 60.00
स्वामी दयानन्द जीवनगाथा *डॉ० भवानीलाल भारतीय* 120.00
सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन *नन्दलाल गुप्त* 140.00
Yogirajadhiraj Swami Vishuddhanand Paramhansdeva : Life & Philosophy *N.L. Gupta* 400.00
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा *म०म०पं० गोपीनाथ कविराज* 250.00
पुराण पुरुष योगिराज श्रीश्यामाचरण लाहिड़ी *अशोककुमार चटर्जी* 120.00
Purana Purusha Yogiraj Sri Shayama Charan Lahiree *Dr. Ashok Kr. Chatterjee* 400.00
योग एवं एक गृहस्थ योगी : योगिराज सत्यचरण लाहिड़ी *शिवनारायण लाल* 150.00
करुणामूर्ति बुद्ध *डॉ० गुणवन्त शाह* 25.00
महामानव महावीर *डॉ० गुणवन्त शाह* 30.00
योगिराज तैलंग स्वामी *विश्वनाथ मुखर्जी* 40.00
ब्रह्मर्षि देवराहा-दर्शन *डॉ० अर्जुन तिवारी* 50.00
भारत की महान साधिकाएँ *विश्वनाथ मुखर्जी* 40.00
भारत के महान योगी (भाग 1-10) 5 जिल्द में *विश्वनाथ मुखर्जी (प्रत्येक)* 100.00
महाराष्ट्र के संत-महात्मा *ना०वि० सप्रे* 120.00
शिवनारायणी सम्प्रदाय और उसका साहित्य *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 100.00
महात्मा बनादास : जीवन ओर साहित्य *डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह* 60.00
पूर्वांचल के संत महात्मा *परागकुमार मोदी* 70.00
भुड़कुड़ा की संत परम्परा *डॉ० इन्द्रदेव सिंह* 150.00
शङ्कर ज्योति *स्वामी सोम स्कन्दम्* 350.00
श्री शङ्कराचार्य *आचार्य बलदेव उपाध्याय* 160.00
ज्ञानदीप *महेश ठाकर* 140.00

अध्यात्म, योग, तंत्र, दर्शन

धन धन मातु गङ्ग *डॉ० भानुशंकर मेहता* 300.00
गङ्गा : पावन गङ्गा *डॉ० शुकदेव सिंह* 25.00
कथा त्रिदेव की *रामनगीना सिंह* 50.00
पूर्ण कामयोग (कामना-सिद्धि और ध्यान के रहस्य) *गुरुश्री वेदप्रकाश* 120.00
उत्तिष्ठ कौन्तेय *डॉ० डेविड फ्राली,* 150.00
सब कुछ और कुछ नहीं *मेहेर बाबा* 60.00
सृष्टि और उसका प्रयोजन *मेहेर बाबा* 65.00
वाग्विभव *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00
वाग्दोह *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00
गुप्त भारत की खोज *पाल ब्रंटन* 200.00
मारणपात्र *अरुणकुमार शर्मा* 250.00
वह रहस्यमय कापालिक मठ ,, 180.00
मृतात्माओं से सम्पर्क ,, 200.00
तिब्बत की वह रहस्यमयी घाटी ,, 180.00
तीसरा नेत्र (प्रथम खण्ड) ,, 250.00
तीसरा नेत्र (द्वितीय खण्ड) ,, 300.00
मरणोत्तर जीवन का रहस्य ,, 300.00
परलोक विज्ञान ,, 300.00
कुण्डलिनी शक्ति ,, 250.00
अभौतिक सत्ता में प्रवेश ,, 200.00
बृहत श्लोक संग्रह *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00
साधना और सिद्धि *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 200.00
सनातन हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म *श्यामसुन्दर उपाध्याय* 75.00
धर्म, दर्शन और विज्ञान में रहस्यवाद *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा, डॉ० वसुन्धरा मिश्र* 250.00
सोमतत्त्व *सं० प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 100.00
श्रीकृष्ण : कर्म दर्शन *शारदाप्रसाद सिंह* 40.00
जपसूत्रम (प्रथम खण्ड व द्वितीय खण्ड) *स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती (प्रत्येक)* 150.00
जपसूत्रम (तृतीय से षष्ठ खण्ड) *स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* यंत्रस्थ
वेद व विज्ञान ,, 180.00
रावण की सत्यकथा *रामनगीना सिंह* 60.00
कृष्ण और मानव सम्बन्ध (गीता) *हरीन्द्र दवे* 80.00
कृष्ण का जीवन संगीत *डॉ० गुणवंत शाह* 300.00
हिन्दी ज्ञानेश्वरी *अनु० ना० वि० सप्रे* 180.00
वेदार्थ पारिजात (2 खण्ड) *करपात्रीजी महाराज* 900.00
श्रीमद्भगवद्गीता (3 खण्डों में) *श्री श्यामाचरण लाहिड़ी* 375.00
कथा राम कै गूढ़ (तुलसी) *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 125.00
संतो राह दुओ हम दीठा (कबीर) *सं० डॉ० भगवानदेव पाण्डेय* 150.00
कृष्णायन *रामबदन राय* 200.00
श्यामाचरण क्रियायोग व अद्वैतवाद *अशोककुमार चट्टोपाध्याय* 100.00
अनंत की ओर *अशोककुमार* 90.00
रामायण-मीमांसा *करपात्रीजी महाराज* 250.00
भक्ति-सुधा *करपात्रीजी महाराज* 190.00
श्रीभागवत-सुधा *करपात्रीजी महाराज* 70.00
श्रीराधा-सुधा *करपात्रीजी महाराज* 50.00
भ्रमर-गीत *करपात्रीजी महाराज* 90.00
गोपी-गीत *करपात्रीजी महाराज* 200.00
सुखी जीवन : कैसे ? *एल०पी० पाण्डेय* 90.00
एकनाथ की भागवत *ना०वि० सप्रे* 750.00
महाराष्ट्र के कर्मयोगी *ना०वि० सप्रे* यंत्रस्थ

म.म.पं. गोपीनाथ कविराज के प्रमुख ग्रन्थ

भारतीय धर्म साधना 80.00
क्रम-साधना 60.00
अखण्ड महायोग 50.00
श्रीकृष्ण प्रसंग 250.00
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा 130.00
शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी 100.00
श्री साधना 50.00
दीक्षा 80.00
सनातन-साधना की गुप्तधारा 100.00
साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 1, 2) 80.00
साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 3) 50.00
मनीषी की लोकयात्रा (म०म०पं० गोपीनाथ कविराज का जीवन दर्शन)अ. 200.00 स. 300.00
ज्ञानगंज 60.00
प्रज्ञान तथा क्रमपथ 80.00
तन्त्राचार्य गोपीनाथ कविराज और योग-तन्त्र साधना 50.00
परातंत्र साधना पथ 40.00
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग 1) 200.00
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग 2) 120.00
अखण्ड महायोग का पथ और मृत्यु विज्ञान 40.00
काशी की सारस्वत साधना 35.00
भारतीय साधना की धारा 30.00
तांत्रिक वाङ्मय में शाक्त दृष्टि 100.00
तांत्रिक साधना और सिद्धान्त 120.00

इतिहास, संस्कृति और कला

Ancient Indian Administration & Penology *Paripurnanand Verma* 300.00
Benaras : The Sacred City *E.B. Havell* 150.00
Prinsep's Benares Illustrated *James Prinsep Int. by Dr. O.P. Kejariwal* 800.00
Hinduism and Buddhism *Dr. Asha Kumari* 200.00
Life in Ancient India *Dr. Mahendra Pratap Singh* 100.00
The Imperial Guptas Vol. I-II *Dr. P.L. Gupta* (Each) 200.00
भारतीय मुसलमान *डॉ० किशोरीशरण लाल* 60.00

प्राचीन भारतीय शासन-पद्धति
प्रो० अनंत सदाशिव अलतेकर 150.00
महाभारत का काल निर्णय *डॉ० मोहन गुप्त* 300.00
प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारधारा
डॉ० लल्लनजी गोपाल 150.00
प्राचीन भारतीय कला में मांगलिक प्रतीक
डॉ० विमलमोहिनी श्रीवास्तव 200.00
प्राचीन भारतीय पुरातत्त्व, अभिलेख एवं मुद्राएँ *डॉ० नीहारिका* 250.00
विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ *डॉ० श्रीराम गोयल* 120.00
ग्रीक-भारतीय (अथवा यवन)
प्रो० ए०के० नारायण 300.00
प्राचीन भारत *डॉ० राजबली पाण्डेय* 150.00
प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख
(खण्ड-1 : मौर्य-काल से कुषाण(गुप्त-पूर्व) काल तक) *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 100.00
प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख
(खण्ड-2 : गुप्त-काल 319-543 ई०) *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 80.00
गुप्त साम्राज्य *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 200.00
भारतीय वास्तुकला *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 100.00
भारत के पूर्व-कालिक सिक्के ,, 170.00
प्राचीन भारतीय मुद्राएँ ,, 45.00
गुप्तोत्तरकालीन उत्तर भारतीय मुद्राएँ (600 से 1200 ई.) *डॉ० ओंकारनाथ सिंह* 70.00
प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्तिकला
डॉ० ब्रजभूषण श्रीवास्तव 140.00
प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु
डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल 450.00
गुप्तकालीन कला एवं वास्तु ,, 200.00
भारतीय संस्कृति की रूपरेखा
डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल 120.00
मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला
डॉ० मारुतिनन्दन तिवारी, डॉ० कमल गिरि 150.00
मध्यकालीन भारतीय प्रतिमालक्षण ,, 325.00
भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क
डॉ० आर० गणेशन 250.00
इतिहास दर्शन *डॉ० झारखण्ड चौबे* 150.00
मध्यकालीन भारतीय इतिहास-लेखन
डॉ० हरिशंकर श्रीवास्तव 80.00
दिल्ली के सुलतानों की धार्मिक नीति
(1206-1526 ई.) *डॉ० निर्मला गुप्ता* 80.00
सल्तनतकालीन सरकार तथा प्रशासनिक व्यवस्था *डॉ० उषारानी बंसल* 50.00
Daishik Shastra *Badrishah Thuldharia* 250.00
प्राचीन भारत में यक्ष पूजा *डॉ० कमलेश दूबे* 250.00
आसन की योग मुद्राएँ *डॉ० रविन्द्रप्रताप सिंह* 250.00
शिव की अनुग्रह मूर्तियाँ
डॉ० शान्तिस्वरूप सिन्हा 250.00
एक विश्व : एक संस्कृति
डॉ० ब्रजवल्लभ द्विवेदी 150.00
शुंगकालीन भारत *सच्चिदानन्द त्रिपाठी* 50.00
बुद्ध और बोधिवृक्ष *डॉ० शीला सिंह* 150.00
बौद्ध तथा जैनधर्म *डॉ० महेन्द्रनाथ सिंह* 180.00
बौद्ध एवं जैन-धर्म तथा दर्शन
डॉ० सत्यनारायण दुबे 90.00
प्राचीन भारतीय समाज और चिन्तन *डॉ० चन्द्रदेव सिंह* 150.00
चालुक्य और उनकी शासन-व्यवस्था
डॉ० रेणुका कुमारी 60.00
कम्बुज देश का राजनैतिक और सांस्कृतिक इतिहास *डॉ० महेशकुमार शरण* 175.00
प्राचीन भारत के आधुनिक इतिहासकार *डॉ० हीरालाल गुप्त* 30.00
मध्यकालीन भारतीय इतिहास-लेखन
डॉ० हरिशंकर श्रीवास्तव 80.00
भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्व
राष्ट्रीय पं० श्री ब्रजवल्लभ द्विवेदी 60.00
धन धन मातु गङ्ग *डॉ० भानुशंकर मेहता* 300.00
शिव काशी *डॉ० प्रतिभा सिंह* 400.00
काशी का इतिहास *डॉ० मोतीचन्द्र* 650.00
काशी की पाण्डित्य परम्परा
पं० बलदेव उपाध्याय 600.00
काशी के घाट : कलात्मक एवं सांस्कृतिक अध्ययन *डॉ० हरिशंकर* 300.00
बना रहे बनारस *विश्वनाथ मुखर्जी* 30.00
स्वतन्त्रता-आन्दोलन और बनारस
ठाकुरप्रसाद सिंह 120.00

हिन्दी साहित्य

साहित्य-शास्त्र

आधुनिक हिन्दी आलोचना : संदर्भ एवं दृष्टि *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 150.00
नया काव्यशास्त्र *डॉ० भगीरथ मिश्र* 80.00
काव्यरस : चिन्तन और आस्वाद ,, 50.00
काव्यशास्त्र *डॉ० भगीरथ मिश्र* 80.00
पाश्चात्य काव्यशास्त्र : इतिहास सिद्धान्त और वाद *डॉ० भगीरथ मिश्र* 70.00
भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र
डॉ० अर्चना श्रीवास्तव 80.00

व्याकरण, भाषा और कोश

A Comparative Study of Bhojpuri & Bengali *Dr. Shruti Pandey* 150.00
कार्यालयीय हिन्दी *डॉ० विजयपाल सिंह* 80.00
प्रामाणिक व्याकरण एवं रचना
डॉ० विजयपाल सिंह 65.00
संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन
डॉ० भोलाशंकर व्यास 80.00
नूतन पर्यायवाची एवं विपर्याय कोश
डॉ० बदरीनाथ कपूर 200.00
प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धान्त और व्यवहार *रघुनन्दनप्रसाद शर्मा* 180.00

संत साहित्य

संत कबीर और भगताही पंथ *डॉ० शुकदेव सिंह* 100.00
कबीर और भारतीय संत साहित्य
रामचन्द्र तिवारी 100.00
तुलसीकृत विनयपत्रिका का काव्यशास्त्रीय अध्ययन *डॉ० रामअवतार पाण्डेय* 320.00
हिन्दी संत काव्य : समाजशास्त्रीय अध्ययन *प्रो० वासुदेव सिंह* 380.00

साहित्य समीक्षा

मुक्तिबोध और उनकी कविता
डॉ० बृजबाला सिंह 180.00
मध्ययुगीन काव्य प्रतिभाएँ
डॉ० रामकली सराफ 80.00
साहित्य, सौन्दर्य और संस्कृति
सं० डॉ० रतनकुमार पाण्डेय 150.00
साहित्य और संस्कृति *डॉ० कन्हैया सिंह, डॉ० राजेश सिंह* 140.00
हिन्दी का गद्य-साहित्य (चतुर्थ 2004 संस्करण)
डॉ० रामचन्द्र तिवारी सजिल्द 600.00
अजिल्द 400.00
हिन्दी गद्य : प्रकृति और रचना संदर्भ
डॉ० रामचन्द्र तिवारी 200.00
क्रान्तिकारी कवि निराला *डॉ० बच्चन सिंह* 80.00
अक्षर बीज की हरियाली
डॉ० वेदप्रकाश अमिताभ 180.00
रघुवीर सहाय की काव्यानुभूति और काव्यभाषा *डॉ० अनन्तकीर्ति तिवारी* 80.00
सर्वेश्वरदयाल सक्सेना और उनका काव्य संसार *डॉ० मञ्जु त्रिपाठी* 100.00
भवानीप्रसाद मिश्र और उनका काव्य संसार *डॉ० अनुपम मिश्र* 160.00
'स्वदेश' की साहित्य चेतना
डॉ० प्रत्यूष दुबे 150.00

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल साहित्य तथा समीक्षा

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* सजिल्द 70.00, अजिल्द 40.00
त्रिवेणी *सं० डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 30.00
चिन्तामणि *सं० डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 40.00
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आलोचना कोश *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 50.00

अज्ञेय साहित्य-समीक्षा

अज्ञेय : एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन
डॉ० ज्वालाप्रसाद खेतान 40.00
अज्ञेय : चेतना के सीमान्त ,, 80.00
अज्ञेय : शिखर अनुभूतियाँ ,, 80.00
अज्ञेय की गद्य-शैली *डॉ० सावित्री मिश्र* 50.00
अज्ञेय और 'शेखर : एक जीवनी'
डॉ० अनन्तकीर्ति तिवारी 40.00

प्रसाद-साहित्य

चन्द्रगुप्त (नाटक) *जयशंकरप्रसाद* 25.00

स्कन्दगुप्त (नाटक) *जयशंकरप्रसाद* 20.00
अजातशत्रु (नाटक) *जयशंकरप्रसाद* 16.00
ध्रुवस्वामिनी (नाटक) *जयशंकरप्रसाद* 9.00
ध्रुवस्वामिनी (मूल नाटक तथा समीक्षा) *डॉ० जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव* 20.00
प्रसाद तथा आँसू (मूल) *डॉ० विनयमोहन शर्मा* 8.00
प्रसाद तथा 'आँसू' (मूल, टीका तथा समीक्षा) *डॉ० विनयमोहन शर्मा* 40.00
कामायनी (काव्य) *जयशंकरप्रसाद* 20.00
लहर *जयशंकरप्रसाद* 15.00
अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद' *सं० पुरुषोत्तमदास मोदी* 150.00
प्रसाद की चतुर्दशपदियाँ *डॉ० किशोरीलाल गुत* 50.00
प्रसाद स्मृति वातायन *सं० विद्यानिवास मिश्र* 150.00

प्रेमचंद-साहित्य

कर्मभूमि (उपन्यास) *प्रेमचंद* 40.00
निर्मला *प्रेमचंद* 25.00
संक्षिप्त गबन *प्रेमचंद* 30.00
गबन (सम्पूर्ण) *प्रेमचंद* अजिल्द 45.00
गोदान *प्रेमचंद* अजिल्द 60.00

कबीर-साहित्य

कबीर-वाङ्मय (पाठभेद, टीका तथा समीक्षा सहित) *डॉ० जयदेव सिंह तथा डॉ० वासुदेव सिंह*
प्रथम खंड : रमैनी सजि. 80.00 अजि. 50.00
द्वितीय खंड : सबद सजि. 300.00 अजि. 200.00
तृतीय खंड : साखी सजि. 250.00 अजि. 140.00
कबीर काव्य कोश *डॉ० वासुदेव सिंह* 150.00
कबीर वाणी पीयूष *डॉ० जयदेव सिंह तथा डॉ० वासुदेव सिंह* 50.00
कबीर और भारतीय संत साहित्य *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 100.00
हिन्दी सन्तकाव्य : समाजशास्त्रीय अध्ययन *डॉ० वासुदेव सिंह* 320.00

लोक साहित्य

भोजपुरी लोक साहित्य *डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय* सजिल्द 400.00, अजिल्द 250.00
लोकगीतों के संदर्भ और आयाम *डॉ० शान्ति जैन* 700.00
पुरइन-पात (भोजपुरी साहित्य संचयन) *सं० डॉ० अरुणेश 'नीरन', डॉ० चितरंजन मिश्र* 200.00
भोजपुरी हृदयेश सतसई *श्रीकृष्ण राय 'हृदयेश'* 120.00

काव्य-ग्रन्थ

जौहर *श्यामनारायण पाण्डेय* 100.00
परशुराम (खण्ड-काव्य) '' 90.00
धूमिल की कविताएँ *सं० डॉ० शुकदेव सिंह* 80.00
वेलि क्रिसन रुकमणी री *सं० डॉ० आनन्दप्रकाश दीक्षित* 80.00
मिरगावती (कुतुबन कृत) *सं० डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 150.00
रीति काव्यधारा *डॉ० रामचन्द्र तिवारी व डॉ० रामफेर त्रिपाठी* 50.00
कीर्तिलता और विद्यापति का युग *डॉ० अवधेश प्रधान* 40.00

कविता-संग्रह (मौलिक कृतियाँ)

राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य-सुधा *डॉ० शिवकुमार मिश्र* 16.00
राष्ट्रप्रेम के गीत *पं० कृपाशंकर शुक्ल* सजि. 150.00 अजि. 100.00
वेद की कविता *प्रभुदयाल मिश्र* 120.00
कंथा-मणि *कुबेरनाथ राय* 100.00
गीताञ्जलि (रवीन्द्र की कविताओं का काव्यानुवाद) *डॉ० मुरलीधर श्रीवास्तव* 60.00
कालिदास : मेघदूत (काव्यानुवाद) *डॉ० श्यामलाकान्त वर्मा* 20.00
माताभूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः *डॉ० शम्भुनाथ सिंह* 50.00
कल सुनना मुझे *धूमिल* 25.00

उपन्यास

हस्तिनापुर का शूद्र महामात्य *युगेश्वर* 140.00
चरित्रहीन *आबिद सुरती* 180.00
बबूल *डॉ० विवेकी राय* 40.00
पांचाली (नाथवती अनाथवत्) *डॉ० बच्चन सिंह* 125.00
ननकी *बच्चन सिंह (पत्रकार)* 60.00
तरुण संन्यासी (विवेकानंद) *राजेन्द्रमोहन भटनागर* 120.00
सागरी पताका *राधामोहन उपाध्याय* 250.00
मैत्रेयी (औपनिषदिक उपन्यास) *प्रभुदयाल मिश्र* 120.00
नसीब अपना-अपना *विमल मित्र* 40.00
मुझे विश्वास है *विमल मित्र* 60.00
महाकवि कालिदास की आत्मकथा *डॉ० जयशंकर द्विवेदी* 80.00
गाँधी की काँवर *हरीन्द्र दवे* 40.00
बहुत देर कर दी *अलीम मसरूर* 60.00
मंगला *अनन्तगोपाल शेवड़े* 30.00
लोकऋण *डॉ० विवेकी राय* 80.00
चौदह फेरे *शिवानी* 100.00
खबर की औकात *बच्चन सिंह* 295.00
ललिता (तमिल उपन्यास का अनुवाद) *अखिलन* 25.00
बज उठी पायलिया (इळंगोवडिहळ् रचित शिलप्पदिकारम्) *रा० वीलिनाथन्* 50.00
नया जीवन *अखिलन* 60.00

साहित्यिक संस्मरण, जीवन चरित

अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद' *सं० पुरुषोत्तमदास मोदी* 150.00
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : व्यक्तित्व चित्र *ज्ञानचंद जैन* 200.00
वटवृक्ष (अमृतलाल नागर) की छाया में *कुमुद नागर* 200.00
स्मृति-शेष : देवेश का दस्तावेज *डॉ० इन्द्रदेव सिंह* 200.00

समाजशास्त्र, धर्म, दर्शन तथा मनोविज्ञान

धर्म, दर्शन और विज्ञान में रहस्यवाद *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा, डॉ० वसुंधरा मिश्र* 250.00
बौद्ध तथा जैनधर्म *डॉ० महेन्द्र सिंह* 180.00
बौद्ध एवं जैन-धर्म तथा दर्शन *डॉ० सत्यनारायण दुबे 'शरतेन्दु'* 90.00
सनातन हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म *श्यामसुन्दर उपाध्याय* 75.00
समाजदर्शन की भूमिका *डॉ० जगदीशसहाय श्रीवास्तव* 150.00
ब्राह्मण-समाज का ऐतिहासिक अनुशीलन *देवेन्द्रनाथ शुक्ल* 200.00
प्राचीन भारतीय समाज और चिन्तन *डॉ० चन्द्रदेव सिंह* 150.00
हिन्दू समाज : संघटन और विघटन *डॉ० पुरुषोत्तम गणेश सहस्रबुद्धे* 50.00
अपराध के नये आयाम तथा पुलिस की समस्याएँ *परिपूर्णानन्दवर्म्मा* 50.00
पुलिसकर्मियों की समस्याएँ : समाजवैज्ञानिक अध्ययन *डॉ० विजयप्रताप राय* 300.00
भारतीय पुलिस *परिपूर्णानन्द वर्म्मा* 80.00
सामाजिक व्यवस्था में पुलिस की भूमिका *चमनलाल प्रद्योत* 40.00

शिक्षा

Educational Philosophy of W.H. Kilpatric *Pratibha Khanna* 300.00
Educational and Vocational Guidance in India *Dr. K.P. Pandey* 150.00
Teaching of English in India *Dr. K.P. Pandey, Dr. Amita* 150.00
Fundamentals of Educational Research *Dr. K.P. Pandey* *In Press*
शैक्षिक अनुसंधान *डॉ० के०पी० पाण्डेय* 100.00
नवीन शिक्षा मनोविज्ञान *डॉ० के०पी० पाण्डेय* यंत्रस्थ
नवीन शिक्षा दर्शन *डॉ० के०पी० पाण्डेय* यंत्रस्थ
शैक्षिक तकनालॉजी के आयाम *डॉ० राजेश्वर उपाध्याय व डॉ० सरला पाण्डेय* 80.00
भारतीय मनीषा के अग्रदूत : पं० मदनमोहन मालवीय *सं० डॉ० चन्द्रकला पाडिया* 150.00
संसार के महान शिक्षाशास्त्री *डॉ० इन्द्रा ग्रोवर* 60.00
महान शिक्षाशास्त्रियों के सिद्धान्त *आर०आर० रस्क* 80.00

पत्रकारिता

हिन्दी पत्रकारिता (भारतेन्दु पूर्व से छायावादोत्तर काल तक) *डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह* 100.00

संसद और संवाददाता
ललितेश्वरप्रसाद सिंह श्रीवास्तव 150.00
इतिहास निर्माता पत्रकार *डॉ० अर्जुन तिवारी* 60.00
हिन्दी पत्रकारिता का नया स्वरूप
बच्चन सिंह (पत्रकार) 200.00
पत्र, पत्रकार और सरकार
काशीनाथ गोविन्द जोगलेकर 120.00
प्रेस विधि *डॉ० नन्दकिशोर त्रिखा* 100.00
संचार क्रान्ति और हिन्दी पत्रकारिता *डॉ० अशोककुमार शर्मा* 200.00
समाचार और संवाददाता
काशीनाथ गोविन्द जोगलेकर 80.00
संवाद संकलन विज्ञान *नारायण व्यंकटेश दामले* 50.00
स्वतंत्रता संग्राम की पत्रकारिता और पं० दशरथप्रसाद द्विवेदी *डॉ० अर्जुन तिवारी* 120.00
'स्वदेश' की साहित्य-चेतना *डॉ० प्रत्यूष दुबे* 200.00
हिन्दी पत्रकारिता के नये प्रतिमान *बच्चन सिंह* 40.00
आधुनिक पत्रकारिता *डॉ० अर्जुन तिवारी* 200.00
सम्पूर्ण पत्रकारिता *डॉ० अर्जुन तिवारी* 200.00
पराड़करजी और पत्रकारिता
डॉ० लक्ष्मीशंकर व्यास 30.00
पत्र प्रकाशन और प्रक्रिया *शिवप्रसाद भारती* 200.00
आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी और साहित्यिक पत्रकारिता *डॉ० इन्द्रसेन सिंह* 120.00
The Rise and Growth of Hindi Journalism
Dr. R.R. Bhatnagar
Ed. by Dr. Dhirendra Nath Singh 800.00
Mass Communication & Development
(Ed.) Dr. Baldev Raj Gupta 250.00
Journalism by Old and New Masters
(Ed.) Dr. Baldev Raj Gupta 250.00
Modern Journalism & Mass Communication
(Ed.) Dr. Baldeo Raj Gupta 250.00

सङ्गीत

राग जिज्ञासा *डॉ० देवेन्द्रनाथ शुक्ल* 250.00
भारतीय सङ्गीत का इतिहास
डॉ० ठाकुर जयदेव सिंह 300.00
प्रणव-भारती *पं० ओङ्कारनाथ ठाकुर* 300.00
संगीतराज : नृपतिकुम्भ कर्ण प्रणीत : प्रथम खण्ड 60.00
भारतीय सङ्गीतशास्त्र का दर्शनपरक अनुशीलन *डॉ० विमला मुसलगाँवकर* 400.00
प्रेम रसायन एवं सङ्गीत मीमांसा *प्रेमलता शर्मा* 500.00
Indian Music *Dr. Thakur Jaideva Singh* 450.00
Indian Aesthetics and Musicology
Dr. Premlata Sharma 500.00

अभिनय, भाषण, वार्ता

बोलने की कला *डॉ० भानुशंकर मेहता* 250.00

स्त्री-विमर्श

स्त्रीत्व : धारणाएँ एवं यथार्थ
प्रो० कुसुमलता केडिया, प्रो० रामेश्वरप्रसाद मिश्र 180.00

भारतीय वाङ्मय
हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका
प्रकाशक
विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी

भारतीय वाङ्मय
मासिक
वर्ष : 5 **नवम्बर 2004** **पूरक अंक : 11**
प्रधान सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी
सम्पादक : **परागकुमार मोदी**
वार्षिक शुल्क : रु० 40.00
अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी *के लिए प्रकाशित*
वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003
प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001
RNI No. UPHIN/2000/10104

सेवा में,

प्रमुख प्रकाशकों की नवीनतम पुस्तकों
यथा कहानी, उपन्यास, कविता, ललित निबन्ध, समीक्षा, पत्रकारिता, स्त्री-विमर्श, जीवनी, संस्मरण, कला, इतिहास, संस्कृति, समाजशास्त्र, दर्शन, संगीत आदि के लिए लिखें या पधारें। तीन हजार वर्ग फुट में शोरूम।

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक पुलिस स्टेशन परिसर
वाराणसी-221 001
फोन : (0542) (कार्यालय) 2413741, 2413082, 2311423 • फैक्स : (0542) 2413082
ई० मेल : vvp@vsnl.com • sales@vvpbooks.com • Website : www.vvpbooks.com

आपका पत्र

सितम्बर 2004 के 'भारतीय वाङ्मय' में 'इतिहास का धर्मयुद्ध' शीर्षक छोटा-सा किन्तु सारगर्भित सम्पादकीय पढ़कर लगा कि इस देश की अस्मिता के रक्षण के लिए जूझनेवाले संघर्ष करने वाले जिन्दा हैं।

हम बुद्धिजीवी केवल तगड़ा वेतन लेकर डकारते हैं, तनिक भी चिन्ता नहीं करते। इतिहास-दृष्टि के अभाव का यही नतीजा है

— डॉ० गिरीश जे० त्रिवेदी
रीडर हिन्दी, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट

'भारतीय वाङ्मय' के सितम्बर अंक में आपने 'इतिहास का धर्मयुद्ध' शीर्षक के अन्तर्गत रक्तिम वैशाखियों पर टिकी सत्ता के सोच पर सटीक प्रहार किया है। नेता स्वयं को सर्वज्ञाता समझने लगे हैं।

प्रेमचंद-कथन या उनका खुद का सोच प्रेमचंद जयन्ती एवं आचार्य वासुदेवशरण अग्रवाल की जन्म शताब्दी के गोष्ठी समाचार श्लाघनीय है। विडम्बना है कि बुलगारिया की राजधानी में मनाए गए भारतशास्त्र सम्मेलन के समाचार के साथ-साथ दिल्ली विश्वविद्यालय सम्बन्धी खबर भी है। महादेवी का महत्त्व व कश्मीरी देवनागरी में सूचनाएँ अच्छी हैं।

— डॉ० मधुसूदन शर्मा, पासीघाट

शिक्षा, संस्कृति, साहित्य, कला, पुस्तकों-पत्रिकाओं आदि की दुनियाँ से जुड़े विपुल एवं विविध समाचार, सूनाएँ तथा समीक्षाएँ इस लघु कलेवर की पत्रिका 'भारतीय वाङ्मय' को एक बड़े दिल की पत्रिका बनाने में सफल है।

सम्पादकीय 'इतिहास का धर्मयुद्ध' में आपने सही समय पर सही जगह हाथ रखा है। जिन लोगों को भारत का कोई इतिहास दिखाई नहीं देता और संस्कृति में कोई अच्छाई नजर नहीं आती।

जन की बात करने वाले जनमन से कैसा खिलवाड़ कर रहे हैं और क्या ही विडम्बना है इस देश की। 'नेति-नेति' की परम्परा वाले इस देश में अब एक पक्षीय सत्य ही सत्य रह गया है। जो ज्यादा चीखेगा, आवाज उसी की तो सुनी जायेगी। चुप रहने वाले की बेगुनाही पर तो सन्देह होगा ही। अत: एक ही झूठ को बार-बार दोहराकर उसे सत्य में बदलने की साजिश लगातार जारी है..जहे किस्मत। **— डॉ० हरीशकुमार शर्मा,** पासीघाट

स्मृति शेष

श्रीमती शकुन्त माथुर

हिन्दी अकादमी, दिल्ली के उपाध्यक्ष डॉ० मुकुन्द द्विवेदी ने **श्रीमती शकुन्त माथुर** के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कहा—श्रीमती शकुन्त माथुर दूसरे सप्तक की कवयित्री थीं। उन्होंने नई कविता के विकास में एक ऐतिहासिक भूमिका निभाई। उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से सामाजिक समरसता को बढ़ावा दिया। उनका साहित्य भारत की धरती और जन-चेतना का प्रतीक है।

कथन

लेखक संघों की भूमिका

प्रगतिशील लेखक संघ, जनवादी लेखक संघ व जन संस्कृति मंच में बहुत अन्तर नहीं है। ये तीन कब तेरह में बदल जायेंगे, कहा नहीं जा सकता। आज जो जितना शोर करता है, जितनी जोर से बोलता है, समझो उतना ही बड़ा क्रान्तिकारी है। इसीलिए तो साहित्य जगत में असहिष्णुता की स्थिति आती जा रही है। किताबों की मँहगाई की बात कहकर पाठक तक न पहुँच पाने की बात की जाती है लेकिन यह सब सिर्फ हिन्दी क्षेत्र की बात है। बंगाल में तो ऐसा नहीं है। वहाँ पर तो आम पाठक भी किताब खरीद कर पढ़ता है। दरअसल इसका कारण यह है कि वहाँ साहित्य और साहित्यकार से आमजन का 'इन्टरैक्शन' लगातार बना हुआ है। वास्तव में हिन्दी क्षेत्र में लिखा बहुत जा रहा है, लेकिन उसमें से बहुत कुछ का न तो जमीन से रिश्ता है और न ही वह आम आदमी की बात कहता नजर आता है। यही वजह है कि आम आदमी कट सा जा रहा है।

— त्रिलोचन

हमारे समय में कविता

कविता शब्द और अर्थ से बनती है। संस्कृति और सभ्यता का सार मूल्य कविता में निहित होता है। जो बड़े और चर्चित कवि हैं, वे भूतकाल के हो सकते हैं। वर्तमान काल की कविता में संस्कृति व सभ्यता के सन्दर्भ प्रस्तुत करना सच्चा कवि कर्म है। सांस्कृतिक रिक्तता को कविता भरती रहेगी। कविता की व्याख्या से सिद्ध होता है कि कविता बराबर आवश्यक रहेगी।

कविता की धारा यदि कालिदास के बाद भी प्रवाहित हो रही है तो इसका अर्थ है कि सृजनात्मकता प्रवहमान प्रक्रिया है जो शब्द और अर्थ के संयत संयोग से क्रियाशील रहती है। काव्य पर नए से नए विचार आते रहेंगे तो लोग काव्य को श्रेय देंगे। **— त्रिलोचन**

❑ ❑ ❑

सच का उद्धरण पूर्णकालिक कवि ही कर सकता है। कवि को स्वप्नद्रष्टा होना चाहिए। अपने सच और बाजार के सच को पहचानना जरूरी है। कविता एक दस्तावेज मात्र नहीं है। रोज के अखबार की तरह कविता को समझने की जरूरत है। चौराहे पर तीन पंक्ति सुनाना कवि का कर्त्तव्य नहीं है। कविता में तात्कालिकता क्या है। लोकभाषा और लोकतत्व को साथ लेने से ही अधिक प्रभाव पड़ेगा।

—कामताप्रसाद

हिन्दी प्रशिक्षण सॉफ्टवेयर

राजभाषा विभाग, नई दिल्ली ने सीडेक पुणे के सहयोग से स्वत: हिन्दी प्रशिक्षण सॉफ्टवेयर हिन्दी प्रबोध, प्रवीण और प्राग्य पाठ्यक्रम विकसित कराये हैं। इन पाठ्यक्रमों से अंग्रेजी, कन्नड़, मलयालम, तमिल और तेलुगु भाषाओं के माध्यम से हिन्दी सीखी जा सकती है। इंटरनेट पर भी यह नि:शुल्क उपलब्ध है।

विद्वानों की दृष्टि में

हिन्दी का गद्य साहित्य

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

आपने हिन्दी गद्य पर जितने विस्तार और अधिकार से लिखा है, उसे देखकर चकित रह जाना पड़ता है। 'हिन्दी का गद्य साहित्य' का चौथा संस्करण आपकी जागरूक अध्ययनशील प्रतिभा का अद्‌भुत प्रमाण है। आपके कृतित्व का सम्मान होना चाहिए। **— विष्णुकान्त शास्त्री,** कोलकाता

हिन्दी गद्य
प्रकृति और रचना संदर्भ

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

'हिन्दी गद्य : प्रकृति और रचना-संदर्भ' इस पुस्तक में समय-समय पर लिखे गये फुटकर निबन्ध संगृहीत हैं। किन्तु उनमें आद्योपांत एक लय विद्यमान है अर्थात् उनके निबन्धों में गद्य भाषा की गहरी पहचान की गयी है। पहला निबन्ध 'हिन्दी गद्य : प्रकृति और सन्दर्भ' भारतेन्दु से लेकर आज तक की विविध प्रवृत्तियों और प्रमुख लेखकों की भाषा की प्रभावशाली यात्रा करता है। 'हिन्दी गद्य की जातीय प्रकृति' में हिन्दी के स्वरूप को लेकर उठी विविध बहसों के बीच उसकी मूल प्रकृति को रेखांकित किया गया है। तिवारीजी ने भारतेन्दु, प्रेमचंद, सियारामशरण गुप्त, महादेवी वर्मा, शमशेर, शेखर : एक जीवनी तथा कुछ नये कवियों के गद्य का बड़ा ही सूक्ष्म एवं सही आकलन किया है। सबकी भाषा के वैशिष्ट्य की गहरी पकड़ इन निबन्धों को बहुत मूल्यवान बनाती है। 'हिन्दी नवजागरण के केन्द्र बिन्दु भारतेन्दु' में भारतेन्दु की लोकचेतना की कुछ अलग ढंग से समीक्षा की गयी है। तिवारीजी ने एक लेख में मैथिलीशरण गुप्त के आलोचक रूप की पहचान उभारी है। जिससे लोग परिचित नहीं हैं। इन सारे निबन्धों में तथ्य और विचार के कुछ नये आयाम उद्‌घाटित होते हैं जिससे यह निबन्ध-संग्रह समीक्षा के क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान स्थापित करता है। इस संग्रह के प्रौढ़ निबन्ध यह प्रतीत कराते हैं कि डॉ० रामचन्द्र तिवारी की साहित्य-साधना न केवल अखण्ड भाव से गतिमान है वरन् वह निरन्तर कुछ नयी प्रौढ़ता से अपने होने को चरितार्थ कर रही है और हिन्दी के पाठकों में यह कामना जगा रही है कि वे सौ वर्षों तक स्वच्छ जीवन जीते हुए इस प्रकार की कृतियों से हिन्दी-साहित्य को समृद्ध करते रहे।

— रामदरश मिश्र, दिल्ली

पुस्तक समीक्षा

बाबा नीब करौरी के अलौकिक प्रसंग

बच्चन सिंह

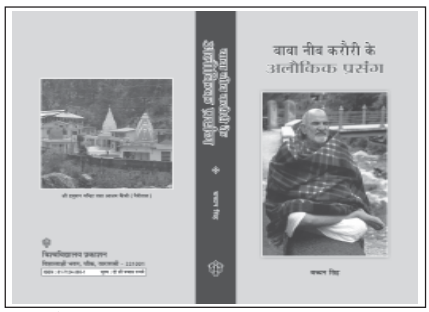

प्रथम संस्करण : 2004 ISBN : 81-7124-385-1
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
पृष्ठ : 544 मूल्य : 250.00

बाबा नीब करौरी के अलौकिक प्रसंगों का संकलन

संजय गौतम

भक्तों के अनुसार बाबा नीब करौरी अपने समय के महानतम संत थे। आपके जन्म का तो ठीक-ठीक पता नहीं लेकिन इतना बताते हैं कि बाबा ने बीसवीं शताब्दी के कुछ ही समय पूर्व आगरा जिले के अकबरपुर गाँव में एक सम्पन्न ब्राह्मण परिवार में जन्म लिया। ग्यारह वर्ष की अवस्था में ही अपना घर त्याग दिया और संन्यासी का जीवन जीने लगे। अनेक स्थानों का भ्रमण करने के पश्चात् आप फर्रुखाबाद जिले के एक गाँव नीब करौरी में आए और वहीं पर ग्रामवासियों के आग्रह से एक गुफा का निर्माण कराकर रहने लगे। वहाँ लम्बे समय तक निवास करने के परिणामस्वरूप ही आप नीब करौरी के बाबा के नाम से प्रसिद्ध हुए। इसके अलावा आप 'हाडीवाले बाबा' एवं तिकोनिया वाले बाबा के नाम से भी जाने गये। आपने नैनीताल के कैंची नामक ग्राम में आश्रम का निर्माण कराया जहाँ आज भी आपके भक्त दर्शन के लिए जाते हैं। हनुमान भक्त संकटमोचक नीब करौरी बाबा का महाप्रयाण वृन्दावन में 11 सितम्बर 1973 को हुआ।

कहा जाता है कि बाबा में पुनर्जीवन देने की शक्ति थी। आप भक्तवत्सल थे एवं भक्तों को संकट से उबरने के लिए हर कहीं अपने सूक्ष्म शरीर के माध्यम से उपस्थित रहते थे। आपकी अनेक अलौकिक कार्य स्मृतियाँ भक्तों की जुबानी सुनी जाती हैं। आपके देश एवं विदेश में अनेक शिष्य एवं भक्त हैं, जिनमें हावर्ड विश्वविद्यालय बोस्टन के मनोविज्ञान के प्रोफेसर डॉ० रिचर्ड एल्बर्ट प्रमुख हैं, जिन्होंने बाबा के अलौकिक प्रसंगों के ऊपर 'मिरैकिल ऑव लव' पुस्तक लिखी। बाबा ने आपका नाम रामदास रखा था। बाबा के जीवन में व्याप्त इन्हीं लौकिक प्रसंगों एवं उनके महाप्रयाण के बाद भी उनकी उपस्थिति का संकलन वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार बच्चन सिंह ने अपनी इस पुस्तक 'बाबा नीब करौरी के अलौकिक प्रसंग' में किया है।

पुस्तक को मुख्यत: चार अध्यायों में बाँटा गया है—बाबा नीब करौरी का जीवन एवं महाप्रयाण, अलौकिक लीलाओं की लम्बी शृंखला, बाबा के महाप्रयाण के बाद की कुछ लीलाएँ तथा नीब करौरी बाबा के वैचारिक प्रसंग। पहले अध्याय में बाबा के जीवन से सम्बन्धित तथ्यों एवं महाप्रयाण की घटना का विस्तार से वर्णन है। दूसरे अध्याय में बाबा के तमाम चमत्कारिक कार्यों एवं भक्तों की जुबान से उनके अलौकिक कार्यों का वर्णन है, जिससे बाबा के भक्त-वत्सल होने का चित्र उभरता है। तीसरे अध्याय में बाबा के महाप्रयाण के पश्चात भी भक्तों के बीच में उपस्थित होते रहने की घटनाओं का चित्रण है, जिससे पता चलता है कि बाबा अपने सूक्ष्म शरीर से हर कहीं उपस्थित हैं। चौथे अध्याय में बाबा के वैचारिक प्रसंगों का उल्लेख है। ईश्वर के बारे में बाबा के विचार उल्लेखनीय हैं—भगवान अपनी प्रकृति रूप में पूर्ण रूप से विद्यमान है। वे सर्वत्र हैं और कभी भी हमारी आँखों से ओझल नहीं होते। यदि हम उन्हें नहीं देख पाते या सच्चाई से उन्हें देखने का प्रयास नहीं करते तो दोष हमारा है। हम भेद दृष्टि से काम लेते हैं। हमारी संकीर्ण मनोवृत्तियाँ हमें इस प्रकार उलझाए रखती हैं कि हम सदा उन्हें भूले रहते हैं। मन शुद्ध न होने से हमें वह शान्ति एवं भगवत प्रेम प्राप्त नहीं हो पाता, जिससे इनका प्रत्यक्ष अनुभव हो सके। (पृ० 526) इस तरह से बाबा ने मन की शुद्धि एवं शान्ति पर सबसे ज्यादा जोर दिया। पुस्तक में पूर्व जिला-जज गोविन्दप्रसाद श्रीवास्तव का लेख 'मेरे नीब करौरी बाबा' तथा पारसनाथ सिंह का लेख 'वाणी सिद्ध महात्मा' भी संकलित है।

'गांडीव' से

स्मृति शेष
देवेश का दस्तावेज

डॉ० इन्द्रदेव सिंह

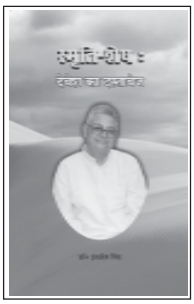

प्रथम संस्करण : 2004
ISBN : 81-7124-392-4
विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी
मूल्य : 200.00

एक साँस में पढ़ गया। कहते हैं बुझने से पहले दीपक की लौ तेज हो जाती है, वह अपूर्व उत्साह से दीप्त है। उनकी सम्पूर्ण प्रतिभा इस पुस्तक में उतर आयी है। अनूठी आत्मकथा है।

पुस्तक उस समय लिखी गई जब लेखक गुर्दे की बीमारी से जूझता हुआ पल-पल अन्त की ओर बढ़ रहा था, युवा पुत्र के वियोग दारुण दु:ख झेल रहा था, अत: स्वाभाविक है कि पूरी कथा पर विषाद के बादल मँडराते रहते हैं। किन्तु गज़ब के आदमी थे इन्द्रदेवजी! इस दशा में भी जिजीविषा, उत्साह, लोकानुराग और इनसे भी बढ़कर बौद्धिक-मानसिक सन्तुलन एवं विलक्षण स्मरणशक्ति, लालित्य, कवि-हृदय, दुर्बलताओं को न छिपाने की ईमानदारी के साथ कथा सुनाने की मौलिक शैली ने इस कृति को उपन्यास जैसा रोचक बना दिया है। हिन्दी के साथ गाँव-जवार की बोली तथा सन्तों की भाषा और बिम्बों के प्रयोग के कारण लेखन में ढाल पर बहती नदी का प्रवाह है जो पाठक को अपने साथ बहाता ले चलता है।

यह कथा भले ही देवेश की कहानी है किन्तु वह लेखक की जन्मभूमि और कर्मभूमि के चतुर्दिक घूमती है। गाजीपुर से गुवाहाटी तक तो उसका विस्तार है ही, विविध प्रसंगों में लेखक के साथ वह तमिलनाडु, केरल, पंजाब और समुद्रपार मारीशस को भी समेटती चलती है। भूगोल का विद्यार्थी होने के कारण सभी स्थानों की आर्थिक भौगोलिक विशेषताएँ उनके दृष्टिपथ में आती हैं तो कवि-हृदय इन्द्रदेव सौन्दर्य से अभिभूत हो उठते हैं। चाहे वह नैसर्गिक हो या मानवीय। मनुष्य उनका सबसे प्रिय विषय है, हर रंग का, हर रूप का छोटा-बड़ा, दानी-सूम, गोरा-काला, राजा-रंक, देव-दानव। रंग-रंगीली दुनियाँ उन्हें खूब भाती है, अच्छी-बुरी जैसी भी है। स्थान, दृष्य, घटना, व्यष्टि सबके शब्द-चित्र प्रस्तुत करने में वे आश्चर्यजनक रूप से निष्णात हैं। दसियों वर्ष पूर्व जो देखा या अनुभव किया, उसका ऐसा चित्र खींचते हैं जैसे कल की बात हो। सूक्ष्मता इतनी कि मानो किसी चारुलेखनशिल्पी (caligrapher) ने अपना सारा कौशल प्रदर्शित कर दिया हो।

यह आत्मकथा एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जो अपने कर्त्तव्य का पालन करता हुआ संसार में सभी रसों का आस्वादन करता रहा हो और साथ ही आत्मान्वेषण में भी जुटा हो। अन्त तक ईमानदार संशयवादी की तरह रास्ता खोजने का उपक्रम चलता रहा किन्तु घाटे का कालम भी दृष्टि से ओझल नहीं हुआ। श्रेष्ठ मानवीय गुणों के साथ अपनी दुर्बलताओं को छिपाने की दुर्बलता से मुक्त इन्द्रदेवजी का यह आत्मचरित हिन्दी के आत्मकथा साहित्य में विशिष्ट स्थान पायेगा, इसमें सन्देह नहीं।

— डॉ० शैलनाथ चतुर्वेदी
पूर्व प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास विभाग
गोरखपुर विश्वविद्यालय

अघोरपंथ और संत कीनाराम

डॉ० सुशीला मिश्र

प्रथम संस्करण : 2004
ISBN : 81-7124-396-7
विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी
मूल्य : 250.00

16वीं-17वीं शताब्दी के कालजयी औघड़ कीनाराम साक्षात् शिव थे। जनश्रुतियों के अनुसार शिव की नगरी काशी के शिवाला स्थित क्रीं-कुण्ड के औघड़ तख्त पर बाबा कीनाराम का सन् 1619 में अभिषेक हुआ था। उस

समय उनकी उम्र मात्र 19 वर्ष थी। अभिषेक के पूर्व वे अपने तपस्याकाल में माँ हिंगलाज के दरबार में अपनी तपस्या पूर्ण करने पहुँचे। वहाँ उन्होंने घोर तपस्या की। माँ हिंगलाज ने प्रसन्न होकर कहा—''तू अब काशी जा। मैं भी आऊँगी और वहीं रहूँगी।'' यहाँ भैरव भीमलोचन ने उन्हें दर्शन दिये। माँ की आज्ञा से बाबा कीनारामजी काशी स्थित महाश्मशान हरिश्चन्द्र घाट आये। जहाँ दत्तात्रेय भगवान् के रूप में बाबा कालूरामजी ने औघड़ तख्त क्रीं-कुण्ड के पीठाधीश्वर पद पर बाबा कीनाराम का अभिषेक किया। कहा जाता है माँ हिंगलाज क्रीं-कुण्ड में हर पल अदृश्य स्वरूप में विद्यमान हैं। बाबा कीनाराम अघोरपंथ के अग्रणी संत थे, उनके भक्तिपद अघोरपंथ के सूत्र हैं। उनके अनेक चमत्कार हैं जो भक्तों को प्रभावित करते हैं, अघोरपंथ की यह परम्परा क्रीं-कुण्ड में आज भी साक्षात् हैं।

नदिया एक घाट बहुतेरे

डॉ० वागीश शास्त्री

प्रथम संस्करण : 2001

ISBN : 81-85570-16-7

वाग्योग चेतनापीठम्, शिवाला, वाराणसी

वितरक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 150.00

विश्व-वाङ्मय के विज्ञाता पुरुष डॉ० वागीश शास्त्री संस्कृत-वाङ्मय के केवल भाष्यधर्मी ही नहीं, रचनाधर्मी विद्वान् चिन्तक भी हैं। प्रस्तुत कृति से इनकी यह विश्वसनीय अवधारणा स्पष्ट होती है कि संस्कृत-वाङ्मय से विश्व-वाङ्मय का आविर्भाव हुआ है। दूसरे शब्दों में, समग्र विश्व-वाङ्मय संस्कृत-वाङ्मय में ही तिरोभूत है। इन्होंने विश्व-वाङ्मय के स्तर पर विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों की अतलस्पर्श तात्त्विकता का तल-स्पर्श अध्ययन-अनुशीलन किया है। इनका वही अध्ययन इस महत्त्वपूर्ण कृति में गहन चिन्तन के स्तर पर अक्षरित हुआ है।

यह कृति उन ज्ञानदुर्विदग्ध इतिहासविदों के लिए मुख-चपेटिका जैसी है, जो आर्यों के अपने देश आर्यावर्त में आर्यों को बाहर से आया हुआ बताते हैं, जबकि इस कृति के पारगामी ज्ञान की आढयता से अलंकृत प्रणेता महामहोपाध्याय डॉ० भगीरथप्रसाद त्रिपाठी, उपाख्य वागीश शास्त्री ने तथाकथित इतिहासविदों की आँखों में उँगली डालकर यह सुझाया है कि आर्य बाहर से आर्यावर्त्त या भारत में नहीं आये, वरन् आर्यावर्त्त से ही निकलकर उन्होंने सम्पूर्ण विश्व में अपनी प्रभावकारी उपस्थिति दर्ज की। इस सन्दर्भ में अभिनव पण्डितराज शास्त्रीजी ने अनेक प्रामाणिक एवं अकाट्य पौराणिक साक्ष्यों के आधार पर अपने मत का पाण्डित्यपूर्ण पद्धति से प्रतिष्ठापन किया है।

भूमण्डलीय स्तर पर भाषा और साहित्य के प्रकाण्ड अध्येता एवं वैदिक विज्ञान और पौराणिक संकृति के प्रमाणपुरुष डॉ० शास्त्रीजी ने अपने स्वीकृत विषय का चिन्तन अभिनव शैली में किया है और चिन्तन के क्रम में ही अनेक नव्योद्भावन भी किये हैं। अपनी इस कृति में इन्होंने कुल इक्कीस बिन्दुओं को विचारणीय बनाया है, जिनमें आर्यों का पूर्व से पश्चिम की ओर प्रस्थान; वैदिक संस्कृत की एक प्राकृत फारसी; आर्यों के आर्यावर्त्त से निष्क्रमण में तथा मगों के अभिजन में पौराणिक साक्ष्य; मुसलमानों की ज्ञानवृद्धि के स्रोत संस्कृत-ग्रन्थ; भारत का प्रत्येक नागरिक हिन्दू है; कभी चीन भी भारत का वंशवद था; समग्र एशियाई संस्कृति का मूलाधार है संस्कृत; यूरोपीय भाषाएँ हैं संस्कृत प्राकृतें आदि अद्यावधि अनास्वादित और अनाघ्रात विषय-बिन्दुओं पर अभिव्यक्त शास्त्रीजी के शास्त्रसिक्त विचारों से विश्व-इतिहास को युगान्तरकारी दिङ्निर्देश प्राप्त हुआ है।

कुल मिलाकर यह अद्वितीय कृति वेदों को 'गड़ेरिया का गीत' तथा पुराणों को 'अतिप्राकृत अविश्वसनीय कथा' माननेवालों के पक्षाघातग्रस्त मस्तिष्क के लिए अवश्य ही ज्ञानोन्मेषक वैद्युतिक कशाघात सिद्ध होगी। ग्रन्थ के परिशिष्ट में विशिष्ट शब्दानुक्रमणिका, विविध भाषा-शब्दसूची एवं कृतिकार की मौलिक और सम्पादित कृतियों के विनियोग से इसकी शोधोपादेयता में ततोऽधिक वृद्धि हुई है। ग्रन्थ के प्रारम्भ में विद्वान् कृतिकार की 'प्ररोचना' (भूमिका) पुस्तक के ध्येय को पूर्णरूप से प्रतिष्ठापित करनेवाली होने के कारण अक्षरशः अन्वर्थित है। यह भूमिका अपने-आपमें स्वतः एक शोध-निबन्ध का मूल्य आयत्त करती है।

— डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव, पटना

लाई हयात आए

लक्ष्मीधर मालवीय

प्रथम संस्करण : 2004

ISBN : 81-7124-392-4

विश्वविद्यालय प्रकाशन

वाराणसी

मूल्य : 280.00

स्मृतियों का आकाश

व्यक्तिगत संस्मरणों तथा विचारोत्तेजक लेखों के इस संगम में स्मृतियों के बहुरंगी व बहुआयामी चित्र हैं। देश की राजनीति, सामाजिक कार्यों और शिक्षा के क्षेत्र में आधार-स्तम्भ रही कई विभूतियों का सम्पर्क लेखक को बचपन से ही मिला। लेखक लक्ष्मीधर मालवीय 25 वर्षों तक जापान के विदेशी भाषा विभाग में विजिटिंग प्रोफेसर रहे हैं, लेकिन उनके मन-मस्तिष्क पर सदैव भारत व हिन्दी छाई रही है।

इस पुस्तक का प्रारम्भ जापान निवासी हिन्दी विद्वान प्रो० दोई क्यूया के संस्मरणों से हुआ है। दूसरा संस्मरण भी हिन्दी के अप्रतिम विद्वान जापानी तानिमुरा तातेकि के व्यक्तित्व चित्रण से है। लेखक ने अपने पितामह पण्डित मदनमोहन मालवीय के साथ अपनी स्मृतियों को बड़ी बारीकी से बुना है। इसके अलावा फिराक गोरखपुरी, बाबू शिवप्रसाद गुप्त, पण्डित ब्रजमोहन व्यास, लक्ष्मीधर प्रभात सहित कई बुद्धिजीवियों के जीवन के अनछुए पहलुओं को लेखक ने चित्रित किया है।

पुस्तक में कोई भूमिका नहीं है, लेकिन इसकी पूर्ति 'अंत में' अध्याय से की गई है। यह पुस्तक के अन्त में ही है और इसमें बताया गया है कि इस पुस्तक का यह रूप कैसे बन पाया।

— नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

बौद्ध तथा जैन धर्म

डॉ० महेन्द्र सिंह

द्वितीय आवृत्ति : 2004

ISBN : 81-7124-382-7

विश्वविद्यालय प्रकाशन

वाराणसी

मूल्य : 180.00

बौद्ध तथा जैन धर्म श्रमण संस्कृति की धाराएँ हैं जो एक साथ संयुक्त रूप से देश में प्रवाहित हुई। तथागत बुद्ध और तीर्थंकर महावीर समकालीन थे। दोनों का प्रचार स्थल प्रायः पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार रहा। दोनों मानवतावादी थे। बौद्ध धर्म का प्रभाव समस्त दक्षिण पूर्व एशिया पर पड़ा। बौद्ध धर्म का लोकप्रिय ग्रन्थ 'धम्मपद' तथा जैन धर्म का प्रमुख ग्रन्थ 'उत्तराध्ययन' है। दोनों धर्मों में यद्यपि समानताएँ होते हुए भी अनेक विविधताएँ हैं। इस शोध-ग्रन्थ में दोनों धर्मों के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के आधार पर विस्तृत तथा समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। बौद्ध तथा जैन धर्म के उपर्युक्त प्रमुख ग्रन्थों को दृष्टिगत रखते हुए शरण-गमन, अर्हत् तत्त्व, कर्म एवं निर्वाण, आचार-मीमांसा, मनोवैज्ञानिक धारणाएँ, यथाचिन्त, अप्रमाद, कषाय तथा तृष्णा का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

आसन एवं योग मुद्राएँ

डॉ० रविन्द्रप्रताप सिंह

प्रथम संस्करण : 2004

ISBN : 81-7124-365-7

विश्वविद्यालय प्रकाशन

वाराणसी

मूल्य : 250.00

नाट्यशास्त्र की परम्परा के अनुसार मनुष्य का सम्पूर्ण शरीर उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति के अनुसार भावों को शारीरिक, मानसिक और वाचिक क्रियाओं के रूप में अभिव्यक्त करता है। योगशास्त्र की परम्परा के अनुसार बैठने के विभिन्न स्वरूपों में सम्पूर्ण शरीर को कार्यशील या सक्रिय माना जाता है। कला के अन्तर्गत आसन एवं मुद्राओं की परम्परा स्वयं देवता के मूर्ति-शास्त्रीय स्वरूप में दिखाई गयी है।

प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व, नाट्यशास्त्र एवं शरीर-साधना शास्त्र के अध्येताओं के लिए महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ।

क्षितिज

द्विमासिक साहित्यिक पत्रिका

सम्पादक :

अमरेन्द्रकुमार, अभियन्ता, ट्रांस्फेट, अमेरिका

प्रकाशक : समीक्षा प्रकाशन

जे०के० मार्केट, छोटी कल्याणी, मुजफ्फरपुर

अमेरिका का पता :

वर्थिंगटन स्ट्रीट, कोलम्बस, ओहियो-43201

'क्षितिज' अमेरिका निवासी प्रवासी भारतीय अमरेन्द्रकुमार द्वारा सम्पादित पत्रिका है। विगत दो वर्ष से प्रकाशित अगस्त 2004 वार्षिकांक है। पत्रिका में विदेशों में प्रवासी भारतीयों द्वारा आयोजित विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमों का विवरण तथा कुछ उनकी रचनाएँ किन्तु अधिकतर विधा विशेषकर सम्पादक श्री अमरेन्द्रकुमार की सम्पादकीय, कविता, कहानी, व्यंग्य, व्यंग्य-कथा, प्रबन्धन मुजफ्फरपुर के रचनाकारों की रचनाएँ प्रकाशित हैं। दुबई में हास्य कवि सम्मेलन, कोलम्बिया विश्वविद्यालय में आयोजित कथा गोष्ठी तथा अन्य साहित्यिक कार्यक्रमों की चर्चा है। अनुक्रम ऋतु के अनुसार वसंत, निदाध, पावस, शरद, हेमंत, शिशिर में विभक्त है।

सम्पादक के अनुसार विविध ऋतुएँ अपने तमाम रंगों-छन्दों और विविधताओं के साथ शामिल हैं।

संस्कृति सन्धान (वार्षिक शोध-पत्रिका)

सम्पादक : **डॉ० झिनकू यादव**

प्रकाशक : राष्ट्रीय मानव संस्कृति शोध संस्थान

53, महामनापुरी कालोनी, करौंदी

वाराणसी-221 005

मूल्य : 150.00

'संस्कृति सन्धान' राष्ट्रीय मानव संस्कृति शोध संस्थान, वाराणसी की एक उच्चस्तरीय वार्षिक शोध-पत्रिका है। इसका प्रकाशन इस संस्थान द्वारा 1988 ई० से लगातार प्रतिवर्ष प्रति अंक के हिसाब से (हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में) होता चला आ रहा है। संस्कृति सन्धान भारतीय इतिहास (प्राचीन काल से लेकर आधुनिककाल तक), कला, साहित्य, पुरातत्त्व, भाषा-विज्ञान, धर्म-दर्शन (ब्राह्मण, जैन, बौद्ध एवं अन्य मत), आयुर्वेद, योग आदि बहुआयामी भारतीय संस्कृति के अप्रकाशित तथ्यों को प्रकाश में लाने का एक सफल प्रयास है।

पत्रिकाएँ

सहकार (त्रैमासिक)

सम्पादक : **भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'**

हिन्दी सहकार संस्थान, 362 सिविल लाइन्स (कल्याणी), उन्नाव (उ०प्र०)

वर्तिका (अंक 7)

सम्पादक : **रामेश्वर पाण्डेय 'पतंग'**

राम बार नीरव

शारदा निकेतन, जनकपुर रोड, पुपरी, सीतामढ़ी

राजस्थान शिक्षण पत्रिका (अहिंसा विशेषांक)

प्रकाशक : माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

जैनधर्म तथा भगवान महावीर पर महत्त्वपूर्ण सामग्री।

जनपक्ष (प्रवेशांक)

सम्पादक : **अशोक पाठक**

जनवादी लेखक संघ, 10 विवेकानन्द नगर, वाराणसी

पुस्तक प्राप्ति

अहिंसक समाज रचना

लेखक : मदनमोहन व्यास

आपना राज आन्दोलन, अजंता रोड, रतलाम

त्रिविधा काव्य समीक्षा

प्रो० रामप्रताप वेदालङ्कार

15/2, त्रिकूटा नगर, जम्मू तवी

स्वरूप सहस्रसई

एक सहस्र दोहों का संग्रह

कृष्णस्वरूप शर्मा 'मैथिलेन्द्र'

शिव संकल्प साहित्य परिषद

हाउसिंग बोर्ड कालोनी, होशंगाबाद (म०प्र०)

युग प्रबोधक तुलसीदास

जगदीशप्रसाद बिलगैयाँ

बिजगैयाँ प्रकाशन, हटवारा, तालबेहट-284126

श्री हनुमान चालीसा दर्शन

दामोदरलाल दोसी

दोसी कला मन्दिर, बांसवाड़ा (राज०)327 001

समकाल

चंद्रकाल बक्षी

साहित्य संकुल, चौटाबाजार, सूरत-395 003

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 5 **नवम्बर 2004** **अंक : 11**

प्रधान सम्पादक

पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक

परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क

रु० 40.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी

द्वारा मुद्रित

E-mail : sales@vvpbooks.com

Website : **www.vvpbooks.com**

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎ : Offi. : (0542) 2421472, 2413741, 2413082, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082